चैतन्य लहरी

नवम्बर–दिसम्बर, 2004

FELICITATIO
EE MATA JI NIRMA

इस अंक में

3 श्री कृष्ण पूजा, (एक रिपोर्ट) लॉस एंजलिस–19 सितम्बर,2004

5 गुरु पूजा,लन्दन–02.12.1979

16 श्रीमाताजी का प्रवचन, मैकेबिअन हाल, आस्ट्रेलिया–22.03.1981

28 विवेक प्राप्ति– श्रीमाताजी के प्रवचनों से उद्धरण

34 चैतन्य लहरियाँ

35 लक्ष्मी तत्व

चैतन्य लहरी

प्रकाशक

निर्मल इन्फोसिस एवं टेकनोलोजीज़ प्रा. लि.
मुख्य कार्यालय : इन्फोसिस हाऊस, प्लाट न. 8,
चन्द्रगुप्त हाउसिंग सोसाइटी,पॉड रोड, कोठरुड
पुणे - 411 029

मुद्रक

अमरनाथ प्रेस प्रा. लि.
W.H.S 2/47 कीर्ति नगर, औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110015
मोबाइल : 9810452981, 25268673

सदस्यता के लिए कृपया निम्न पते पर लिखें:-

श्री जी.एल. अग्रवाल
निर्मल इन्फोसिस एवं टेकनोलोजीज़ प्रा. लि.
222, देशबन्धु अपार्टमैंट, कालका जी
नई दिल्ली-110 019
फोन : 26216654, 26422054

आप अपने अनुभव, सुझाव, सहज सम्बन्धी लेख आदि निम्नलिखित पते पर भेजें :

श्री ओ. पी. चान्दना
जी-11-(463), ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली - 110 034
दूरभाष : 011-55356811
प्रात: 08.00 बजे से 09.30 बजे
सायं: 08.30 बजे ये 10.30 बजे

श्री कृष्ण पूजा
लॉस एंजलिस
19 सितम्बर,2004
(इंटरनेट विवरण)

प्रिय योगियो और योगिनियों, लास एंजलिस में हुई कृष्ण पूजा 2004 के महान अनुभव मैं आपके साथ बांट रही हूँ। हम लास एंजलिस से 40 मिनट की दूरी पर वुडलैंड हिल्स होटल में रुके हुए थे। ये अत्यन्त सुन्दर होटल था।(मेरियोट)। लगभग 600–650 योगी जिनमें से अधिकतर अमेरिका और कनाडा से थे परन्तु कुछ स्विजरलैंड, फ्रांस तथा अन्य दूर दराज देशों से भी थे। शुक्रवार और शनिवार की रात संगीत कार्यक्रमों में श्रीमाताजी नहीं पधारीं। हम सबने कनाडा तथा भिन्न राज्यों के संगीत का आनन्द लिया। कनाडा के सहजयोगियों ने एक लघु कामदी पेश की। शनिवार की सुबह कोलम्बिया के सहजयोगियों ने एक सुन्दर प्रस्तुतिकरण किया जिस में उन्होंने परम पूज्य माताजी के नाम (निर्मल) का अर्थ वर्णन किया। ये इतना सशक्त प्रस्तुतीकरण था कि आने वाले गणेश या दिवालीपूजा के अवसर पर इसकी सी.डी.उपलब्ध कराई जाएगी। 45 मिनट के इस अनूठे प्रस्तुतिकरण में संगीत और श्रीमातीजी की सुन्दर तस्वीरें थीं और साथ ही साथ परम पूज्य श्री माताजी के नाम के अर्थ की व्याख्या भी। 'निर' का अर्थ है कुछ नहीं। श्रीमाताजी कहते हैं कि वे कुछ भी नहीं हैं। तो हमें भी अपने विषय में यही सोचना चाहिए कि हम कुछ भी नहीं हैं। जब हम इस प्रकार अपने विषय में सोचने लगते हैं कि हम कुछ भी नहीं हैं तो हम आत्मा बनने लगते हैं। अपना चित्त हमें स्वंय पर न रख कर आत्मा पर रखना चाहिए । 'माँ' का अर्थ है माँ, ये वो शक्ति है जो हमें गुरु बनाती है। जब हम अपने स्वामी बन जाते हैं तो सन्तुलन में होते हैं और स्वंय से हमारा सामंजस्य स्थापित हो जाता है।'ला' वह शक्ति है जो सारा कार्य करती है। ये प्रेम (Love)की शक्ति है जिसके द्वारा सभी कुछ प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार 'निर्मला' हमारे लिए अत्यन्त अर्थपूर्ण है। स्वामित्व,शक्ति तथा प्रेम पा लेते हैं तो हम सहजयोगी का जीवन जीना शुरु करते हैं और हमारी उत्क्रान्ति होती है। श्रीमाताजी ने यह भी कहा कि समस्याएं हमारे ही तरीके से होती हैं। क्योंकि बिना समस्याओं के न तो हमारा परिवर्तन होगा और न ही हम उन्नत होंगे। हमने अपनी समस्याओं का सामना करना है और उन पर काबू पाना है। और इसी प्रस्तुतिकरण में और भी बहुत सारी चीजें प्रस्तुत की गईं थीं परन्तु उनमें से ये कुछ महत्वपूर्ण बातें याद हैं। आशा है बाद में हमें इसकी सी.डी. मिल सकेगी।

इस प्रस्तुति के बाद इंगलैंड के डाक्टर डेविड स्पायरो ने सहज विश्व परिषद के बारे में बताया जिन्हे श्रीमाताजी ने हाल ही में बनाया है। भिन्न देशों के चालीस अगुवाओं के प्रतिनिधित्व वाली इस परिषद की जिम्मेदारी होगी कि विश्व भर में सहजयोग का प्रचार –प्रसार करे। उन्होंने यह भी बताया कि श्रीमाताजी ने कबेला हाउस तथा हैंगर, जिसमें आजकल पूजाएं होती हैं, VND के नाम लिख दिया है। इस परिषद के सदस्य योगी गण सभी कानूनी मामलों, सहज प्रकाशन तथा सहजयोग के अन्य महत्वपूर्ण कार्यों के प्रतिभारी होंगे।

रविवार के दिन हमनें रक्षा–बन्धन का त्यौहार मनाया और बहनों नें भाई–बहन पावन सम्बन्धों को स्थापित करने के लिए एक–एक भाई चुना। सहजयोग में यह पवित्रतम सम्बन्ध है। यह समारोह श्रीकृष्ण पूजा के समय पर मनाया जाता है क्योंकि श्रीकृष्ण जी की महान बहन श्री विष्णु माया थीं जो कि बाई विशुद्धि की देवी भी हैं। निःसन्देह श्रीकृष्ण मध्य और बाई विशुद्धि के देवता भी हैं और दाई

विशुद्धि पर तो वे सम्राट बन जाते हैं। राखी बंधने के बाद स्त्री–पुरुष जीवन भर के लिए भाई–बहन बन जाते हैं और आवश्यकता के समय एक–दूसरे की सहायता और रक्षा करने का वचन देते हैं।

शाम को आनन्द विभोर होकर हम सबनें परम पावनी श्रीमाताजी के स्वागत की तैयारियाँ कीं। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण अवसर था (पहली बार इतनी तीव्र चैतन्य लहरियों को मैने महसूस किया था। पूजा में श्रीमाताजी ने प्रवचन देने की आवश्यकता नहीं समझी। हम सभी लोगों ने उनका प्रेम,शक्ति एवं उनकी उपस्थिति से बहने वाली सुरक्षा को महसूस किया। सर्वप्रथम श्री गणेश की पूजा हुई जिसमें बच्चों नें श्रीमाताजी के चरणों पर पुष्प अर्पण किए। इसके बाद श्रीकृष्ण की पूजा हुई। शक्ति उनके चेहरे से फूट पड़ रही थी, मुझे ऐसे लगा जैसे हमारे अन्दर तथा आसपास विद्यमान सारी नकरात्मकता को वो दूर कर रही हैं। वास्तव में वे हमारी आन्तरिक एवं बाह्य बाधाओं को दूर कर रही थीं। मुझे ऐसे लगा मानों वे अपने परमेश्वरी स्वभाव और महान् शक्तियों की अभिव्यक्ति कर रही हों। श्री माताजी के इस परमेश्वरी स्वभाव को हम व्यक्तिगत रूप से गहन ध्यान की स्थिति में महसूस करते हैं। परन्तु इस बार वे ये अनुभव पूरी सामूहिकता में प्रदान कर रही थीं। पूजा अत्यन्त शक्तिशाली और गहन थी और सभी योगियों ने शक्तिशाली चैतन्य लहरियाँ अनुभव कीं। इस महान् मंगलमय घटना से मैं अभिभूत थीं।

पूजा के बाद सभी देशों ने श्रीमाताजी को उपहार दिए। इस अवसर पर मुझे श्रीमाताजी के समीप रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ क्योंकि न्यूयॉर्क के सहज प्रभारी श्री वासु किसी और काम में लगे हुए थे। श्रीमाताजी के प्रस्थान करने के समय भी उनके समीप होने का सौभाग्य मैं पा सकी। झुककर मैंने श्रीमाताजी को प्रणाम किया, उन्होंने मेरी ओर देखा ,मुझे ऐसा लगा मानो विश्व की महानतम माँ मुझसे कह रही हो," ये सब एक भ्रम हैं! मैं ये शरीर नहीं हूँ, मैं जीवन की हर चीज हूँ। मेरा स्वभाव दिव्य हैं! यदि आपमें इच्छा है तो इस क्षण आप ये सब देख सकते हैं।" श्रीमाताजी का सबसे बड़ा सौन्दर्य यह है कि वो कुछ भी नहीं कहतीं। परन्तु हमारी कुण्डलिनी का योग जब उनसे हो जाता है तो हम एकदम से जान जाते हैं कि परमेश्वरी हम मानवों को क्या समझाना चाहती हैं! ज्यों ही उन्होंने मुझे देखा चैतन्य लहरियों के माध्यम से मैं उन्हें साक्षात् माँ के रूप में पहचान सकी। उनके एक कटाक्ष से मैं समझ गई कि वे मानव नहीं परमेश्वर हैं। श्रीमाताजी चले गए और हम सब शब्द–विमूढ़, हतप्रभ दशा में खड़े रहे।

ये वास्तव में एक महान् शक्ति का अनुभव था। सभी पूजाएं अधिकाधिक शक्तिशाली होती चली जा रही हैं, चैतन्य लहरियाँ भी अविश्वसनीय ढंग से शक्तिशाली हो रही हैं। कौन कल्पना कर सकता था कि इसी जीवन में हम लोग साक्षात् देवी का सामीप्य और उनका प्रेम पा सकेंगे! कौन कल्पना कर सकता था कि सहजयोग और आदिशक्ति हमारी उत्क्रान्ति इतने उच्च स्तर पर करेंगी कि हम इतनी सुन्दर चीजों को अनुभव कर पाएं! सहजयोगी बनकर हम कितने भाग्यशाली हैं!

सभी को प्रेम एवं जय श्रीमाताजी

एना मानसीनी–न्यूयॉर्क

गुरु पूजा

(ईसा–मसीह के अवतरण की पूर्व संध्या)

लन्दन–02.12.1979

एक महीना पूर्व मैनें रुस्तम से कहा कि इस रविवार को एक पूजा का आयोजन करो क्योंकि यह पूर्णिमा का दिन है। उसने मुझसे पूछा कि क्या यह गुरु पूजा है, महालक्ष्मी पूजा या गणेश पूजा? मैनें बताया कि इसे गुरु पूजा कहो और बहुत समय पश्चात् जब मैं भारत जा रही थी तो उसने मुझसे पूछा कि क्यों न हम ईसा–मसीह पूजा भी यहीं कर लें ?

आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि बहुत समय पूर्व जब ईसा– मसीह मात्र एक बच्चे थे,उन्होंने धर्म–ग्रन्थों में पढ़कर जनता के सामने घोषणा की की वे ही वह अवतरण (Advent) हैं जो रक्षक (Saviour) हैं। लोगों का विश्वास था कि रक्षक (Saviour) अवतरित होने वाले हैं। आज बहुत समय पश्चात् एक रविवार के दिन उन्होंने घोषणा की कि मैं ही वह रक्षक हूँ। यही कारण है कि आज अवतरण रविवार है (Advent Sunday)। उनका जीवन बहुत छोटा था, अतः बहुत ही छोटी आयु में उन्हें यह घोषणा करनी पड़ी कि वे ही अवतरण हैं।

ये बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं कि उनसे पूर्व किसी ने भी खुल्लम–खुल्ला यह नहीं का था कि वे अवतरण हैं। श्री राम तो भूल ही गए थे कि वे अवतरण हैं। एक तरह से उन्होंने स्वयं को यह बात भुला दी थी , अपने ऊपर माया जाल डाल कर वे पूर्ण मानव–' मर्यादा पुरूषोत्तम ' बन गए थे और श्रीकृष्ण ने भी केवल एक व्यक्ति, अर्जुन को यह बात बताई थी और वो भी युद्ध शुरु होने से पूर्व। अब्रहम ने कभी यह नहीं कहा कि वे अवतरण हैं यद्यपि वे आदि गुरु (Primordial Master) थे अवतरण थे। दत्रात्रेय ने भी कभी नहीं कहा कि वे आदिगुरु के अवतरण हैं जो इन तीनों शक्तियों को अबोधिता के माध्यम से गतिशील करके लोगों का पथ प्रदर्शन करने के लिए अवतरित हुए मोज़ेज यद्यपि यह जानते थे कि वे महान अवतरण हैं जिन्होंने प्रकृति को वश में कर लिया है, फिर भी उन्होंने कभी नहीं कहा कि वे अवतरण हैं।

ईसा–मसीह के समय में उन्होंने महसूस किया कि ये बात बताना आवश्यक है अन्यथा लोग इसे नहीं समझेंगे।

उस समय यदि लोगों ने ईसा– मसीह को पहचान लिया होता तो कोई समस्या न होती। परन्तु अभी मानव को आगे विकसित होना था। विराट में स्थित दरवाजे के माध्यम से जाने के लिए किसी न किसी को तो आज्ञा चक्र पार करना ही था, यही कार्य करने के लिए ईसा–मसीह पृथ्वी पर आए।

अत्यन्त आश्चर्यजनक बात है कि इस जीवन वृक्ष पर जड़ों से कोंपल निकलते है कोंपलो से डालियाँ निकलती है, डालियों से पत्ते और फूल निकलते हैं। फिर भी जिन लोगों को जड़ों का ज्ञान है वे कोंपलों का ज्ञान नहीं पाना चाहते और जिन्हें कोंपलों का ज्ञान है वे फलों को नहीं पहचानना चाहते! मानव का यह अजीबोगरीब स्वभाव हैं।

मैनें अपने विषय में कभी नहीं कहा क्योंकि मैंने महसूस कर लिया था कि मानव ने अब अहँ का एक अन्य ऐसा आयाम प्राप्त कर लिया है जो ईसा–मसीह के समय के अहँ से भी भयानक है। आप चाहे जिस चीज को दोष दें, आप इसे औद्योगिक क्रांति कह सकते हैं क्योंकि इसके कारण आप

प्रकृति से दूर हो गए, जो चाहे आप इसे कह सकते हैं, परन्तु मानव ने वास्तविकता से अपने सम्बन्ध तोड़ दिए थे। बनावट के रूप में वे पहचाने जाते थे और इतने बड़े सत्य को स्वीकार करना उनके लिए असम्भव होता। यही कारण है कि मैनें तब तक अपने विषय में कुछ नहीं बताया जब कुछ भूत बाधित लोगों ने मेरे विषय में नहीं बताया और जब तक लोग इस बात पर आश्चर्य नहीं करने लगे कि माताजी की उपस्थिति में कुण्डलिनी जागृति जैसा कठिन कार्य भी इतनी गति से हो जाता है।

भारत में एक मन्दिर था जिसके विषय में कोई न जानता था। परन्तु यह पाया गया कि एक स्थान विशेष के समीप जो भी समुद्री जहाज चले जाते वे मंदिर तट की तरफ स्वतः ही खिंच जाते और उन्हें वापिस समुद्र में ला पाना बहुत कठिन होता। उस आकर्षण क्षेत्र से जहाज को वापिस खींचने में उन्हें दुगनी ताकत लगानी पड़ती,परन्तु ये बात वो न समझ पाते कि कौन सी शक्ति कार्यरत है।

लोगों ने समझा कि समुद्र की गहराई में कुछ कमी है, परन्तु लगातार बहुत से जहाजों के साथ यह घटना घटित हुई। तब उन्होंने ये जानना चाहा कि इन जहाजों के साथ क्या घटित हो रहा है,क्यों ये समुद्र तट की तरफ खिंचे जा रहे हैं? अतः उन्होंने इस बात का पता लगाना चाहा। जब वे जंगल में गए तो वहां एक मन्दिर पाया जिसके शिखर पर एक बहुत बड़ा चुम्बक स्थापित किया हुआ था। तो अपने तर्क विवेक के माध्यम से लोग इस बिन्दु तक पहुँचे कि 'माताजी' कुछ विशेष चीज़ हैं क्योंकि धर्म ग्रन्थों में कहीं भी इस बात का वर्णन नहीं किया गया है कि पृथ्वी पर एक ऐसे अवतरण अवतरित होंगे जिनके कटाक्ष मात्र और विचार मात्र से ही कुण्डलिनी जागृत हो जाएगी। जंगलों में, पागल भीड़ से दूर हिमालय में बैठे हुए बहुत से सन्त इस बात को जानते हैं क्योंकि उनकी चेतना इतनी उन्नत स्थिति में है जहाँ वो इस बात को समझ सकते हैं। आप लोगों से भी कहीं अधिक वो समझते हैं क्योंकि अभी तक आप बच्चे हैं – नवजात शिशु। वो बड़े हो चुके हैं। परन्तु "आज के दिन जब मैं घोषणा करती हूँ कि मैं ही वह अवतरण हूँ जिसे मानवता की रक्षा करनी है, मैं घोषणा करती हूँ कि मैं ही 'आदिशक्ति' हूँ जो सभी माताओं की माँ है, जो 'आदि माँ' है, शक्ति है, परमात्मा की शुद्धतम इच्छा है जो स्वयं को, इस सृष्टि को, मानव मात्र को स्वयं का अर्थ देने के लिए इस पृथ्वी पर अवतरित हुई है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि अपने प्रेम एवं धैर्य के माध्यम से और अपनी शक्ति के माध्यम से मैं इस कार्य को पूर्ण करूँगी।"

'मैंने ही बार–बार पृथ्वी पर जन्म लिया, परन्तु अबकी बार मानव को स्वर्ग का साम्राज्य, आनन्द तथा परमानन्द प्रदान करने के लिए मैं अपनी पूर्ण कलाओं में पूर्ण शक्तियों के साथ अवतरित हुई हूँ। मानव का केवल उद्धार करने तथा उनकी रक्षा करने के लिए नहीं आई, क्योंकि उनके पिता (सर्वशक्तिमान परमात्मा) उन्हें आनन्द एवं परम स्थिति का आशीष देना चाहते हैं।'

इन शब्दों को कुछ समय सहज योगियों तक ही सीमित रखा जाना चाहिए।

आज गुरु पूजा का दिन है, मेरी पूजा का नहीं, गुरु रूप में आपकी पूजा का, गुरु रूप में मैं आप सबका अभिषेक करती हूँ और आज मैं आपको बताऊँगी कि मैंने आपको क्या प्रदान किया है और आप कितनी महान् शक्तियाँ प्राप्त कर चुके हैं।

आपमें अभी भी ऐसे बहुत से लोग हैं जिन्होंने अभी 'पहचाना' नहीं है, मेरी इस घोषणा से उनके अन्दर यह 'पहचान' कार्यान्वित होगी। मुझे 'पहचाने' बिना आप लीला को नहीं देख सकते, लीला देखे

बिना आपमें आत्मविश्वास नहीं आ सकता, आत्मविश्वास के बिना आप गुरु नहीं बन सकते। गुरु बने बिना आप अन्य लोगों की सहायता नहीं कर सकते और अन्य लोगों की सहायता किए बिना आप आनन्द में नहीं जा सकते। श्रृंखला को तोड़ना बहुत आसान है, परन्तु आपको तो एक के बाद एक श्रृंखला बनानी है। आप सब यही कार्य करना भी चाह रहे थे। अतः आत्मविश्वस्त, आनन्दित एवं प्रसन्न हों ताकि मेरी शक्तियाँ आपकी रक्षा करें, मेरा प्रेम आपको शक्ति प्रदान करे और मेरा स्वभाव आपको शांति एवं आनन्द की स्थिति प्रदान करें।

परमात्मा आपको धन्य करे।

उस दिन आपको बताया था कि सम्भवोपाय और शक्तोपाय लोगों को स्वच्छ करने के दो तरीके हैं। एक मार्ग द्वारा आप केवल कुछ ही लोगों को स्वच्छ कर सकते हैं। थोड़े से लोग लेकर आप उन्हें स्वच्छ करते रहते हैं ताकि उनका चित्त पूर्णतः स्वच्छ हो जाएं, तत्पश्चात उनके पाँचों तत्वों को स्वच्छ करके उनकी कुंण्डलिनी को उठाएं और वो आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकें। यह सम्भवोपाय कहलाता है। इस मार्ग से आपका व्यक्तित्व पूर्णतः स्वच्छ हो जाता है।

दूसरा शक्तोपाय है। इसमें शक्ति आपकी कुण्डलिनी को उठाती है, चाहे जो भी स्थिति रही हो और इसके बाद शुद्धिकरण का कार्य होता है। तो सहज–योग में हमने दूसरा उपाय अपनाया है क्योंकि सम्भवोपाय के लिए कोई समय नहीं बचा है। इसे कर पाना असंभव होगा। तो शक्तोपाय में लोग प्रायः क्या करते हैं, यह शक्ति पथ है। शक्ति पथ में दूसरे व्यक्ति पर शक्ति परछाई की तरह से डाली जाती है या जैसे हम पर प्रकाश पड़ता है उस प्रकार से। तो वे अपनी कुण्डलिनी की शक्ति दूसरे व्यक्ति की कुण्डलिनी पर डालते हैं और धीरे–धीरे उसकी कुण्डलिनी को उठाते हैं।

परन्तु मनुष्य अपने स्वभाव के अनुरूप कठोर परिश्रम के तरीके भी कुण्डलिनी जागृति के लिए अपनाते हैं। पहले वे पता लगाते हैं कि कुण्डलिनी की समस्या क्या है, फिर वे आपका पूरा इतिहास पूछते हैं, पता लगाने के लिए सभी कुछ करते हैं। आपके माता–पिता कैसे थे, आपको स्वप्न कैसे आते हैं। पूरी तरह से वे आपका विश्लेषण करते हैं। तब वे पता लगाते हैं कि आपको किस प्रकार की बीमारियाँ हो चुकी हैं। उदाहरण के रूप में, वे पता लगाते हैं कि किसको आँखों की तकलीफ हुई, किसको नाक, पेट, गला आदि की तकलीफ हुई और सभी प्रकार की चीज़ों को नज़रअंदाज़ किया जाता है। अब आप कल्पना कर सकते है कि इस श्रेणी में हममें से कितने लोग आते हैं। वो ये भी पता लगाते हैं कि व्यक्ति ने किस प्रकार का जीवन अब तक बिताया है और उसके माता–पिता का इतिहास क्या है।

जो लोग युवा आयु में गुरुओं के पास जाकर शक्ति–पथ की याचना किया करते थे उनमें से अधिकतर के साथ ऐसा होता था।

अब मेरे कारण, आप जानते हैं, यह शक्ति पथ बहुत आसान हो गया है। आपको यही करना है – शक्तिपथ अर्थात् आपको अपना प्रकाश अन्य लोगों पर डालना है। शक्ति–पथ अर्थात् शक्ति के प्रकाश को अन्य लोगों पर डालना है। तो अब आपकी शक्ति किसी भी अन्य व्यक्ति की कुण्डलिनी पर पड़ सकती है और उसकी कुण्डलिनी जागृत हो सकती है। यह अत्यंत कठिन कार्य था। पहले कहा जाता था कि केवल वीतराग व्यक्ति, जिसने मोह–लिप्सा आदि पर विजय प्राप्त कर ली हो, ही, जो पूर्णतः निराग हो, केवल वही कुण्डलिनी उठा सकता है।

तो सर्वप्रथम दीक्षा दी जानी आवश्यक थी। वह आपको प्राप्त हो चुकी है, जिस दिन आप मेरे पास आए थे उसी दिन आपको दीक्षा मिल गई थी परन्तु आप इस बात को महसूस नहीं कर सकते कि यह कार्य किस प्रकार होता है। दूरबीनी (Telescopically) विधि से बहुत से कार्य होते हैं और आपको पता भी नहीं चलता कि आपके साथ किस प्रकार की इतनी सारी चीजें हुई हैं। अतः केवल दीक्षा देने के लिए व्यक्ति को बहुत सा कष्ट दिया जाता है। कहने से मेरा अभिप्राय है कि आपको गुरु की सेवा करनी पड़ती है, काफी सेवा, उसके लिए फल आदि ले जाने पड़ते हैं, कुछ धूर्त लोग धन भी लेते हैं परन्तु कोई बात नहीं। कुछ दक्षिणा तो देनी ही होती है क्योंकि गुरु की देखभाल करना चेलों का ही कार्य है। गुरु आपकी धन सम्पत्ति या आपकी दी हुई चीजों से लिप्त नहीं है, परन्तु ये शिष्यों का कर्त्तव्य है कि गुरु की देखभाल करे। इसी कारण से, सम्भवतः, गुरु को थोड़ा सा पैसा देना भी आवश्यक था। परन्तु अब ये गुरु इस प्रथा का दुरुपयोग कर रहे हैं। गुरु को क्योंकि कहीं रहना है, उसके लिए घर की आवश्यकता है, तो दक्षिणा के रूप में थोड़ा सा पैसा दिया जाना उसे आवश्यक है। परन्तु अब पूरी चीज़ को इतना गलत ढंग से उपयोग किया जा रहा है। इस प्रथा को मूर्खता की चरम सीमा तक ले जाया जा रहा है कि लोगों के लिए अब यह उद्यम बन कर रह गया है।

गुरु इतना उन्नत होना चाहिए कि वह कुण्डलिनी जागृत कर सके। वह वीतराग हो – एक ऐसा व्यक्ति जिसे संसार से कोई मोह न हो, बिल्कुल निर्मोह हो, जिसका चित्त इतना शुद्ध हो चुका हो कि उसमें ज़रा तनिक सा भी मोह बाकी न हो। उसमें किसी भी प्रकार का प्रलोभन शेष न हो। व्यक्ति में केवल क्षमाशीलता शेष रह जाए। ऐसे व्यक्ति को वीतराग माना जाता था। ऐसा व्यक्ति जब कुण्डलिनी उठाना चाहेगा तो वह इस कार्य को कर सकेगा, केवल ऐसे गिने–चुने व्यक्ति ही कुण्डलिनी को संभाल (Command) सकते हैं।

अतः सर्वप्रथम तो आप सब लोगों को, बिना किसी परिचय के गुरु से दीक्षा प्राप्त हो गई है। तो तुम्हें दीक्षा प्राप्त हो गई है, तुम्हें महादीक्षा भी प्राप्त हो गई है। दीक्षा पहले होती है, महादीक्षा क्या है? दूसरी महादीक्षा में साधक को कोई नाम या मंत्र दिया जाता है (प्रायः केवल एक नाम दिया जाता है)। परन्तु यह मंत्र भी तभी लिया जाना चाहिए जब गुरु को मंत्र का ज्ञान हो। कहने से मेरा अभिप्राय यह है कि यह गुरु तो ये भी नहीं जानते कि आपका कौन सा चक्र पकड़ रहा है, इस बात की आप कल्पना करें!

अतः वे व्यक्ति की कुण्डली देखा करते थे। मेरे पास आप एक ऐसे समय पर आए हैं, आज आप मेरे पास आए हैं, आपकी कुण्डली क्या है ? आपको क्या कष्ट है? आपका जन्म कौन से नक्षत्र में हुआ? आपके माता–पिता के नाम क्या थे ? इन चीज़ों के विषय में एक बहुत बड़ा विज्ञान हुआ करता था। अ,ब,स, से ये लोग गिनना आरम्भ किया करते थे और तब यह किसी बिन्दु पर पहुँचा करते थे जहां इन्हें कोई शब्द मिला करता था, जैसे दूसरा शब्द क्या है, तीसरा शब्द क्या है और फिर किसी बड़े शास्त्र में देखकर ये पता लगाते थे कि आपमें कौन सा चक पकड रहा है, तब वो साधक को कोई नाम देते थे कि' ठीक है आप ' राम' का नाम जपें। ' राम–राम' कहते रहे जब तक आपका हृदय चक्र ठीक नहीं हो जाता। इसमें चाहे दो साल लग जाएं,चाहे, तीन साल लग जाए,दो जीवन लग जाएं या सौ–जीवन लग जाएं। आप एक ही मंत्र '

राम–राम' जपते रहे। परन्तु ये सब आपके नक्षत्रों आदि, आपके परिवार,घर तथा सभी चीजों की जानकारी के बाद किया जाता था और तब यह निर्णय होता था कि कौन–सा चक्र पकड़ा हुआ है अब मान लो आपके चार चक्र पकड़े हुए हैं, क्योंकि आपकी कुण्डली ये सब बताती है कि आपको क्या कष्ट हैं या आपको कौन से कष्ट होंगे। आरम्भ में केवल शारीरिक कष्ट। अतः वे लोग आपकी कुण्डली के माध्यम से ये सब पता चलाते थे कि आपको कौन सी समस्याएं है। मान लो आपको पेट की समस्या है तो वे सोच सोचकर पता लगाते कि पेट का कौन सा मंत्र है क्योंकि वैज्ञानिक की तरह से सीधे ही वे इस बात का पता नहीं लगा सकते।

वैज्ञानिक किस प्रकार चीजों का पता लगाते थे? मान लो आप किसी डाक्टर के पास जाते हैं तो वह आपकी आँखें निकालकर धो देंगे और उन्हें वापिस लगा देंगे और कहेंगे कि आँखें ठीक हैं। तब वह आपके दांत निकाल लेंगे,उनकी जगह बनावटी दांत लगाकर कहेंगे कि आपके दांत ठीक हैं। फिर वे आपके कान निकालकर उनके स्थान पर कुछ बनावटी यंत्र लगा देंगे और कहेंगे कि यह ठीक है। फिर आपका हृदय निकालकर इसका निरीक्षण करेंगे और उसके स्थान पर कुछ नया लगा देंगे। ऐसा ही है, ये लोग भी ऐसे ही किया करते थे क्योंकि ये भी अंधेरे में टटोलते थे। जिस प्रकार से आप लोगों को चक्रों का ज्ञान है इन लोगों को इस बात का ज्ञान न था कि कौन से चक्र पकड़ रहे हैं।

अब आप कल्पना कर सकते हैं कि कौन सी महा, महा, महा दीक्षा आपको प्राप्त हो गई है!

पहले तो आपको दीक्षा प्राप्त होती है, जिस दिन आपकी कुण्डलिनी जागृत होती है, ये दीक्षा है। तब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होता है। उनके लिए तो इसका प्रश्न ही न था, एक ही सांस में वे इसकी बात भी न कर सकते। उन्हें तो हर वक्त हवा में वे लटकाए रखा जाता था और रात को जिस प्रकार चमगादड़ उलटे लटके होते हैं उन्हें लटका दिया जाता था। तब अन्य चीजों को देखा जाता था जैसे आपके कैसे मित्र है, आप कैसे लोगों के प्रति आकिर्षत हैं ? तो ये लोग स्वभाव देखते थे और इससे किसी निर्णय पर पहुँचते थे तभी वो आपको दूसरा मंत्र दे सकते थे और साधक उनके साथ घंटों तक मंत्र कहे चला जाता था। हर समय वह मंत्र ही रटता रहता था, अपनी अन्य आवश्यकताओं पर बिना कोई ध्यान दिए। जब मंत्र पर सिद्धी प्राप्त हो जाती थी तब वे कहते थे, अब आपके लिए मंत्र सिद्ध हो गया है अर्थात् अब आप इस मंत्र को किसी दूसरे पर भी उपयोग कर सकते है, यानि आप अब केवल' राम' का मंत्र उपयोग कर सकते है। इसकी आप कल्पना कीजिए।

अब आपको क्या प्राप्त हुआ है? आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है, ठीक है। परन्तु आत्मसाक्षात्कार का अर्थ यह है कि अब आपको पूर्ण ज्ञान प्राप्त हो गया है कि मंत्र क्या है और किस चक्र के लिए कौन सा मंत्र बनाना है। आपमें सभी चक्रों को देखने की शक्ति आ जाती है कि कौन से चक्र को सहायता की आवश्यकता है। आपमें अन्य लोगों की कुण्डलिनी उठाने की शक्ति है ,कुण्डलिनी यदि नीचे की ओर आती है तो उसे सहस्रार पर बांधने की शक्ति है। चक्रों को बन्धन देकर उन्हें स्थापित करने की शक्ति आपमें है और बन्धन द्वारा नकारात्मकता से अपनी रक्षा करने की शक्ति भी आपमें है। अपने चित्त को आप किसी भी स्थान पर ले जा सकते हैं और किसी के भी बारे में जान सकते हैं कि किसको आपकी सहायता की आवश्यकता है। सामूहिकता की समस्या जानने की शक्ति भी आपमें है, जैसे आप जान सकते हैं कि

लन्दन में क्या समस्या है (अपने दोनों हाथ फैलाकर पूछें कि लन्दन में क्या समस्या है, इस प्रकार से) बायां हृदय और दायां हृदय। इस प्रकार से, मुख्यतः बायें हृदय पर पकड़ आ रही है। इसकी व्याख्या करने के लिए आपके पास भाषा है। आपने कहा कि बायां हृदय। ऐसा कहकर आपने किसी का दिल नहीं दुखाया। लन्दन के आप लोगों को बाएं हृदय की पकड़ है, इसका अर्थ क्या है? इसका अर्थ यह है कि आप लोग आत्मा के विरुद्ध चल रहे हैं। आत्मा में आपकी कोई दिलचस्पी नहीं है,आप भौतिकतावादी हैं अहंकारी हैं और आत्मा की कोई चिन्ता नहीं करते,अपनी आत्मा को आप हानि पहुंचाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आप शराबी हैं, और मद्यपान से अपने को नष्ट करने में लगे हुए हैं। परन्तु ये सब बातें आपको कहनी नहीं पड़तीं,आप केवल इतना कह देते हैं कि आपका बायां हृदय पकड़ रहा है,समाप्त। आप इतना भी नहीं कहते कि आपको क्षमाशील होना चाहिए आदि, अपने दोनों हाथ इस तरह से खोलकर बाएं हृदय चक्र पर लन्दन के लोगों के लिए क्षमा याचना करते हैं और उन्हें क्षमा मिल जाती है और फिर वे और ज्यादा शराब पीते हैं और अपने हृदय चक्र की दुर्दशा कर लेते हैं।

अतः अब आपको यह सब शक्तियां प्राप्त हो गई हैं, आप कुण्डलिनी उठा सकते हैं और कुण्डलिनी जागृति के मार्ग में आने वाली बाधा को दूर कर सकते हैं। किसी का आज्ञा चक्र यदि पकड़ा हुआ है तो गुरु लोग उनका आज्ञा चक्र इसलिए ठीक नहीं किया करते थे कि कहीं उनका अपना आज्ञा चक्र न पकड़ जाए। अतः सिद्ध होने के लिए उन्हे मंत्र –जाप करना पड़ता था। सिद्ध का अर्थ है कि व्यक्ति की शक्ति प्रमाणित हो चुकी है अर्थात् वह प्रभावशाली हैं। आपके सभी मंत्र प्रभावशाली है। आप किसी देवी– देवता का नाम लें, आपके मंत्र तो पहले से ही सिद्ध हैं और प्रभावशाली हैं। गट्ठड़ की तरह इसमें सभी कुछ है। आप इसे खोलें। किसी का कोई चक्र यदि पकड़ रहा हो। अब उस चक्र का मंत्र कहें और वह ठीक हो जाएगा। आपको क्योंकि सभी मंत्रों का ज्ञान है, आप जानते हैं कि यह क्या है, इसका रहस्य आप जानते हैं अन्य लोग नहीं जानते। यदि आप नाम भी नहीं लेते, उसकी तरफ इशारा मात्र करते हैं तो भी सब जान जाते है कि क्या मामला है, कहाँ जाना है और क्या कहना है। अतः यद्यपि यह इतना बड़ा रहस्य है फिर भी आप लोग इसको समझते हैं। हमारे बीच परस्पर इस तालमेल पूर्ण समझ को देखें। हम जानते हैं कि कौन सी चीज़ क्या है और फिर न तो अपने विषय में इसका बुरा मानते हैं और न ही अन्य लोगों के। यद्यपि मैं कहती हूँ कि आपमें अहम् बहुत अधिक् है फिर भी कोई मुझ पर पलट वार नहीं करता। ईसा–मसीह के समय में 'अहँ' का नाम लेना सम्भव न था। अब आप स्पष्ट रूप से देख सकते हैं और कह सकते हैं कि यह आपका अहँ, प्रति अहँ, आपकी मूर्खता आदि–आदि सभी चीज़ें हैं।

किसी में यदि शक्ति है, कोई चाहे जन्मजात् आत्मासाक्षात्कारी है, फिर भी वह कुण्डलिनी जागृत करने के विषय में कुछ नहीं जानता। वह तब तक कुण्डलिनी जागृत नहीं कर सकता, जब तक वह सहज–योगी नहीं बन जाता। अतः जन्मजात आत्मसाक्षात्कारी जो अपनी कोई सीमा नहीं समझते, उन्हें समझ लेना चाहिए कि उन्हें सहजयोगी बनना पड़ेगा अन्यथा वे प्रभावशाली नहीं हो सकते, वे क्रियावादी नहीं हो सकते और न ही इस कार्य को कर सकते हैं।

तो आपके अन्दर ये सब गुण हैं, आपमें सभी

देवी–देवताओं का पूर्ण ज्ञान है। आप जानते हैं कि देवी–देवता क्यों नाराज़ हो जाते हैं, समस्या क्या है, किस बात से देवी–देवता कुपित हो जाते हैं। मैं यदि केवल इतना कहूँ कि 'पाप मत करो', समाप्त। आप कहेंगे 'पाप क्या है ?' तब आप कहते हैं 'ऐसा मत करो'। इसी से बात समाप्त नहीं हो जाती आप कुछ न कुछ चालाकी करने लगते हैं। आप पर आपकी माँ का पक्का बन्धन है। आप यदि शराब पीने का प्रयत्न करेंगे तो आपको उल्टी हो जाएगी। कुछ और यदि आप गलत कार्य करेंगे तो आपका पेट खराब हो जाएगा, सहज–योग से यदि आप आना–कानी करने लगेंगे तो आपको उसमें होना पड़ेगा क्योंकि यद्यपि आपको यह महसूस नहीं हो रहा फिर भी अपने अन्दर आप सहज–योग के चमत्कार को महसूस कर चुके हैं।

परन्तु अब भी लोगों का एक ऐसा समूह है जो आत्मसाक्षात्कारी हैं परन्तु उस स्थान पर नहीं हैं। इन दोनों में क्या अन्तर है ? अत्यन्त सहज – पहचान। जिन लोगों ने मुझे नहीं पहचाना है उन्हें आशीर्वाद प्राप्त नहीं होगा। वो गोल–गोल घूमते रहेंगे। अतः पहचानना बहुत आवश्यक है। कुछ लोग ऐसे हैं, जैसे उदाहरण के रूप में शिरडी साईं नाथ के शिष्य। शिरडी साईं नाथ अब जीवित नहीं हैं परन्तु वे उनमें विश्वास करते हैं। परन्तु अब शिरडी साईं नाथ हैं कहाँ? वर्तमान अवतरण में ये लोग विश्वास करना नहीं चाहते। ये केवल मृत में ही विश्वास करना चाहते हैं। वे 'राम' को मानते हैं, ईसा–मसीह को मानते हैं। अधिकतर ईसाई लोगों में यह समस्या है। वे मेरी तुलना भी ईसा–मसीह से करते हैं। ईसा–मसीह सम मुझे समझे बिना वे सहज–योग को स्वीकार नहीं कर सकते या फिर वे मोजिज या किसी ऐसे अन्य अवतरण से मेरी तुलना करेंगे।

आपको वर्तमान में रहना है। मुझे आप अपनी धारणाओं में नहीं बांध सकते। आपकी धारणाएं सीमित हैं। आपका जन्म यदि यहाँ पर होता तो आप ईसाई बनते, आपका जन्म यदि भारत में होता तो आप हिन्दु होते, आपका जन्म यदि चीन में होता तो आप चीनी होते। इस प्रकार से आप कुछ भी होते। एक बार जब आपमें असामन्जस्य कार्य करने लगता है तो आप तुरन्त जान जाते हैं कि यह असामांजस्य की स्थिति है क्योंकि तब आपकी चैतन्य लहरियाँ रुक जाती हैं। अतः आधे अधूरे लोगों का समूह, जो अभी तक सहजयोग में स्थापित नहीं हो पाए हैं, जिन्हें अभी पूरी शक्तियां नहीं प्राप्त हुई हैं, वे लोग मुझे पहचान नहीं सकते। ये मूर्खता है। मुझे पहचानते ही (स्वीकार करते ही) आपकी चैतन्य लहरियां बहने लगेगी। इस तरह के लोगों के समूह उन लोगों के हैं जो दूसरे गुरुओं आदि के भिन्न स्रोतों से आए हैं। तब उनके विषय में समस्या होती है। ऐसे लोग जब सहजयोग में आते हैं तो उन्हें भी आत्मसाक्षात्कार मिल जाता है क्योंकि मैं तो उदारता से परिपूर्ण हूँ। चाहे वे जैसे भी हों! उस दिन एक वैश्या आ गई, उसे भी आत्म साक्षात्कार मिल गया। केवल इतना ही नहीं सहजयोग एक लम्बी रस्सी देता है। आसानी से आपकी चैतन्य लहरियाँ समाप्त नहीं होतीं, यदि आपने अच्छी तरह से इन्हें पा लिया हो तो।

सहजयोग क्योंकि प्रकाश है, सहजयोग में आने के पश्चात् आपको अपनी खामियाँ दिखाई देने लगती हैं और तब आप सहजयोग को नकारने लगते हैं। कुछ लोगों को झिनझिनाहट (Tingling) महसूस होने लगती है, कुछ लोगों को सामान्य स्थिति में ठीक लगता है परन्तु मेरे सम्मुख आकर वो हिलने लगते हैं या उनका शरीर ऐंठने लगता है। कुछ लोग ज्यों ही मुझे देखते हैं वो तप जाते

हैं, उनके पेट में दर्द हो जाता है! क्योंकि प्रकाश होते ही आप स्वयं का सामना करने लगते हैं। स्वयं का सामना आप करना नहीं चाहते। मुख्य बात यह है कि जो लोग सहजयोग में सुस्थिर नहीं हैं वो अपनी वास्तविकता का सामना नहीं करना चाहते। स्वयं को यदि वे लोग देखें तो वे बिना किसी देरी के अपने को सुधार लेंगे क्योंकि अब प्रकाश हो चुका है। आप अपनी खामियों से एक रूप नहीं होते। आप डाक्टर हैं, आपके पास प्रकाश है और आप ही शल्य क्रिया (Operation) करते हैं तथा इस कार्य को करने का ज्ञान भी आपको है।

इस बात का यदि आप निर्णय कर लें कि मैं स्वयं का सामना करूंगा और देखूंगा कि मैं कौन हूँ तो यह सभी खामियां आपको छोड़ देंगी। परन्तु आप तो अपना सामना ही नहीं करना चाहते। यही कारण है कि आत्म साक्षात्कार पा लेने के बाद भी लोग इसमें आना नहीं चाहते। जिन्हें शीतल चैतन्य लहरियाँ प्राप्त होती हैं वे भी इनके विषय में अधिक नहीं सोचते, क्योंकि यदि वे इनके विषय में बहुत सोचेंगे तो उन्हें अपना अहम् त्यागना होगा और अहम् के साथ तो उन्होंने मित्रता बनाई हुई है! जो भी हो उन्हें स्वयं को देखना पड़ेगा। वो कहते हैं, 'नहीं, मैं पहले से बेहतर नहीं हूँ, मुझे झिनझिनाहट हो रही है, ऐसा हो रहा है। मेरे शरीर में सुइयाँ चुभ रही हैं और दर्द हो रहा है। ऐसा कैसे हो सकता है ? मेरी सहायता नहीं हो रही, सहज–योग मुझे पीछे की ओर ले जा रहा है।' जिन लोगों में सुधार हुआ है उन्हें देखने की अपेक्षा वे सहजयोग को दोष देने लगते हैं।

परन्तु आप किसे दोष दे रहे हैं ? एक ऐसी चीज़ को जो आपकी रक्षा करेगी। आप अपने रक्षक (Saviour) को दोष दे रहे हैं। बेहतर होगा कि आप अपनी समस्याओं, दोषों को देखें और उनसे मुक्ति पा लें। इन सांपों और बिच्छुओं तथा अपने से चिपके हुए सभी बन्धनों से मुक्त होकर स्वच्छ हो जाएं, यही आपकी स्वयं पर बहुत बड़ी कृपा होगी। प्रकाश हो चुका है। उस प्रकाश में आप देखना आरम्भ करें कि सत्य क्या है तब आपके सभी भ्रम छूट जाएंगे और आपकी वास्तविक एकरूपता स्थापित हो जाएगी, अन्यथा ऐसा नहीं हो सकता। आपको स्वयं का सामना करना होगा। कभी स्वयं को न्यायसंगत न ठहराएं।

अपने बेटों, भाइयों, अपनी पत्नी या पति को न्यायसंगत ठहराने की कुछ लोगों में आदत होती है। ऐसा करके आप उनका हित नहीं करते। इस प्रकार के सारे दुष्प्रवृत्ति लोग एकजुट हो जाते हैं। अपनी शक्ति दर्शाने के लिए दो बुरे व्यक्ति एक हो जाएंगे। मुझे आश्चर्य है कि यहाँ पर उनका कोइ संघ नहीं है अन्यथा माताजी के खिलाफ ऐसे नकारात्मक लोगों का संघ यहाँ भी आपको दिखाई पड़ता। कहने से मेरा अभिप्राय है कि हो सकता है आप भी सभी चीज़ों का सामना कर रहे हों क्योंकि ऐसे लोग एकजुट हो जाते हैं और उनका बहुत बड़ा संघ बन जाता है। आपने देखा होगा कि लुटेरे सदा एकजुट होते हैं। उनमें गहन मित्रता होती है और अपने भेद एक दूसरे को बताते हैं। परन्तु दो अच्छे लोग यदि एकजुट हो जाएं तो पूरा विश्व परिवर्तित हो सकता है। अतः इस बात को भली भांति समझ लें कि सदैव सकारात्मक लोगों के पास जाने का प्रयत्न करें नहीं तो आप सहजयोग में विकसित न हो सकेंगे। नकारात्मक बातें करने वाले किसी भी व्यक्ति के समीप न जाएं।

परन्तु इस देश में लोगों का एक अन्य समूह है। कल क्योंकि आप लोगों ने गुरु बनना है इसलिए मैं आपको सभी तरह के लोगों के विषय में बता रही हूँ। ये लोग स्वयं का सामना नहीं करते। किसी न

किसी तरीके से अपना सामना करने से बचते हैं। उनका एक तरीका यह भी है कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते ही वे इसका विश्लेषण करने लगते हैं। आप उन्हें कुछ भी दे दें वे इसका विश्लेषण करेंगे। इस देश में ये लोग सोचते हैं कि वे किसी भी चीज का विश्लेषण कर सकते हैं। मैं नहीं जानती कि उन्हें यह धारणा कहाँ से प्राप्त हुई है! हो सकता है ये धारणा उन लोगों को वैज्ञानिकों, मनोवैज्ञानिकों या तथाकथित बुद्धिजीवियों से मिली हो। वे सोचते हैं कि उन्हें यह कहने का अधिकार है कि, "इस कारण से यह ऐसा है", परन्तु अभी तक तो आपकी आँखें भी खुली नहीं हैं, आप इतने नन्हे बच्चे हैं, किस प्रकार आप इन चीजों का विश्लेषण करने लगते हैं, "ऐसा क्यों हुआ, वैसा क्यों हुआ ?" एक बार जब आप विश्लेषण करने लगते हैं, इसके बारे में बोलने लगते हैं तो सभी कुछ खो देते हैं।

आपने करना यह है कि इसे प्राप्त करना है, आत्मसात करना है और अधिक से अधिक स्वयं को इसके सम्मुख उघाड़ना है। सहजयोग के दोष न खोजें, "परन्तु यह समझ लें कि आपके अन्दर दोष हैं जिन्हें केवल सहजप्रेम द्वारा दूर किया जा सकता है।"

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो मेरे पास आकर कहते हैं "माँ आपने ऐसा क्यों नहीं किया? माँ आपने वैसा क्यों नहीं किया? मेरे ख्याल से मैं अपने कार्य को अच्छी तरह से जानती हूँ, वे मुझे सिखाने का प्रयत्न करते हैं, वो मुझे शिक्षा भी देते हैं: आपको ऐसे करना चाहिए था, आपको वैसे कर लेना चाहिए था।" आप चाहे जैसे कर लें कोई न कोई बिन बात का चौधरी आगे आ जाएगा क्योंकि व्यक्ति का यही स्वभाव है। अतः इस स्वभाव के बदले, अपने स्प्रिंग थोड़े से हटा लें, स्थिर हो जाएं और आप देखेंगे कि ये स्प्रिंग विश्लेषण बाजी के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। हमें बहुत से ऐसे व्यक्ति मिल जाते हैं। तो इस प्रकार के व्यक्तियों से कैसा व्यवहार करना चाहिए। मैंने ऐसे नुक्ताचीनी करने वाले व्यक्तियों से जिस प्रकार व्यवहार किया है आप भी वैसा ही करें। मेरी बात को ध्यान से सुनें। आप किसी व्यक्ति को आत्मसाक्षात्कार देते हैं, ठीक है? उसे हाथों में शीतल चैतन्य लहरियाँ भी महसूस होती हैं, फिर भी वह कहने लगता है, 'तो क्या?' आप उसे बताएं कि ये लहरियाँ आपको सोचने से नहीं मिलीं, क्या ऐसा हुआ ? और न ही ये नुक्ताचीनी से मिली हैं। इससे पूर्व कभी आपको यह अनुभूति नहीं मिली होगी। ये क्या है? आप इसकी व्याख्या नहीं कर सकते। आपके साथ ये एक ऐसी घटना घटित हुई है जो आपकी विचार शक्ति से परे है। ये शक्ति आपके विचारों से अधिक शक्तिशाली है। यह निर्विचारिता है। कोई व्यक्ति यदि निर्विचार हो तो लोग सोचते है कि यह आधा पागल है !

अतः जब भी आप निर्विचार चेतना की बात करते हैं तो लोग समझते हैं कि आप पुराने विचारों के हैं क्योंकि आप सोचते नहीं हैं। ये घटना एक ऐसी शक्ति के माध्यम से हुई है जो आपके विचारों से कहीं ऊँची है। विचारों द्वारा आपने कौन सा कार्य किया है ? विचारों मे फंसकर आपने अपनी नाक काट ली, आँखें फोड़ ली हैं, हाथ काट लिए हैं, सभी कुछ काट डाला है। अब आपने युद्ध लड़ना है। अतः आत्मसाक्षात्कार देने के बाद आप लोगों से बताएं कि विचारों द्वारा उन्हें आत्मसाक्षात्कार नहीं मिला, ये किसी उच्च शक्ति की देन है। इस वरदान देने वाली ऊँची चीज की बात करो। "अतः यदि आप उच्च स्तर पर रहना चाहते हैं तो सोचने की तुच्छ शक्ति को वश में करना होगा।" इस प्रकार से लोग समझ पाएंगे। यदि आप यह कहने

का प्रयत्न करेंगे, "कृपा करके आप सोचना बंद कर दीजिए", तो लोग कहेंगे, "क्या सोचना बंद कर दें ? क्या ये सोचने के लायक भी नहीं हैं, क्या ये इतने बेकार हैं ?" तो ये उन लोगों को रास्ते पर लाने के लिए है जो अहँवादी हैं, हर वक्त सोचते हैं परन्तु जब उन्हें शीतल चैतन्य लहरियाँ महसूस होती हैं तो वे स्वीकार नहीं करते। इस प्रकार धीरे–धीरे आप उनकी सहायता करते हैं।

अब गुरु के विषय में, क्योंकि अब आप गुरु हैं। आपके पास पूरा ज्ञान है, पूरी शक्ति है, सभी कुछ है। आपमें यदि कमी है तो आत्मविश्वास की, दूसरे आप अकर्मण्य हैं। मैं नहीं समझ पाती कि किस प्रकार यह अकर्मण्यता दूर हो पाएगी। कई बार ये अकर्मण्य लोग भी काम आ जाते हैं। ऐसे लोगों को सरकस में तोप में डालकर धमाके से उड़ाया जाता है ताकि वे अपने करतब दिखा सकें। वो इतने आलसी होते हैं कि किसी भी तरह उन्हें जगाया नहीं जा सकता।

परन्तु आप लोग मेरे बच्चे हैं, ईसा–मसीह और श्री गणेश की तरह से मैंने आपका सृजन किया है। उनकी सभी शक्तियां आपको उपलब्ध हैं, परन्तु ये एक ऐसी अवस्था है जहां मैं बहुत बार असफल हो जाती हूँ, मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार आपकी आलसी प्रवृत्ति को ठीक करूँ! आपने सहज–योग का अभ्यास नहीं किया, आपको अत्यंत आसानी से, बहुत ही सस्ते में आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है। आप इसका मूल्य नहीं समझते, इसीलिए इसे गौण बना देते हैं। आपको स्वयं को अनुशासित करना होगा। जब तक आप स्वयं को अनुशासित नहीं कर लेते तब तक मैं सभी कुछ आपकी स्वतंत्रता के ऊपर छोड़ देती हूँ क्योंकि मैनें सदा अपने बच्चों की स्वतंत्रता में विश्वास किया है। मैं सोचती हूँ कि वे इतने तुच्छ नहीं हो सकते कि मैं उनकी स्वतंत्रता पर बन्धन लगा दूँ और वे स्वतंत्र रूप से कार्य न कर सकें। आप पूर्णतः स्वतन्त्र हैं, आप यदि नरक में जाना चाहते हैं तो सीधे वहां जाने के लिए मैं आपको रथ दूंगी और आप यदि स्वर्ग में जाना चाहते हैं तो वहां जाने के लिए मैं आपको विमान दूंगी। तो यह आप लोगों पर निर्भर है, प्रगल्भ बनें और अपने में आत्मविश्वास लाएं। आपको सभी चक्रों का ज्ञान है, आप जानते हैं कि कुण्डलिनी को कैसे उठाना है। आप सभी कुछ जानते हैं। अतः यह उत्तरदायित्व आप अपने ऊपर ले सकते हैं। आप ही वो व्यक्ति हैं जो ये जिम्मेदारी सम्भाल सकता है।

मैं आप सबसे नाराज़ भी हो सकती हूँ, बहुत ही आसान बात है। परन्तु, नहीं, मुझे ये कार्य करना है इसलिए आपसे अत्यन्त प्रेम से बात करनी पड़ती है। कभी–कभी आपको डाँटना भी पड़ता है। घुमाफिरा कर आपसे पूछना पड़ता है, कभी आपको तैयार करना पड़ता है, कभी आपके पुर्जों में तेल डालना पड़ता है, कभी कुछ करना पड़ता है, कभी कुछ करना पड़ता है, कभी आपको गरम करना पड़ता है, कभी आपको ठंडा करना पड़ता है किसी तरह से मैं यह सब चला रही हूँ। लोगों को किसी तरह से रास्ते पर लाकर उनसे ऐसा बर्ताव करती हूँ।

इसी प्रकार से आपने अन्य लोगों से व्यवहार करना है, नाराज़ नहीं होना। नाराज़ होना तो बहुत आसान है, इसके बाद कोई समस्या रहेगी ही नहीं। मैं यदि आपसे एक बार नाराज़ हो जाऊं तो मेरी समस्याएं समाप्त हो जाएंगी और मुझे शान्ति मिल जाएगी। आपको सभी के प्रति अत्यन्त धैर्यवान होना है। अत्यन्त धैर्यवान। आपकी भाषा का ?

सुधरना अत्यन्त आवश्यक है। 'कृपा करके,' 'मुझे खेद है' यहाँ ऐसे बहुत से शब्द हैं परन्तु मुझे ऐसा लगता है कि ये मूल्यहीन हैं।

अतः हम एक परिणाम तक पहुँचते हैं कि हमें हृदय से महसूस करना चाहिए कि इस व्यक्ति को बचाना है, इसकी सहायता करनी है। परन्तु कभी–कभी आपको डांट भी लगानी पड़ती है क्योंकि आप लोग पाएंगे कि अधिकतर नकारात्मक लोग बहुत ही टेढ़े होते हैं। ऐसे लोग हर संभव तमाशा बना देते हैं। अपने को बहुत बड़ी चीज़ दर्शाते हैं। जब यह सभी चीजें समाप्त हो जाएंगी तो सहजयोग की शुरूआत होगी। परन्तु इस तरह के लोग बहुत बड़ा बोझ होते हैं। इसलिए आपने निर्णय करना है कि कहीं आप माताजी पर बोझ तो नहीं हैं। क्या आप यहां पर यह कहने के लिए आए हैं कि मेरे पिता बीमार हैं, मेरी माताजी बीमार हैं या मुझे नौकरी दिला दीजिए या मेरे लिए ये कर दीजिए या मेरे लिए वो कर दीजिए। ये सभी चीजें व्यर्थ हैं किसी काम की नहीं। मेरे विचार से ये बिल्कुल व्यर्थ हैं बिल्कुल अर्थहीन। इनके विषय में अधिक न सोचें। अब आपको ठीक हो जाना चाहिए। सहजयोग का इस्तेमाल करना चाहिए। लोगों से पूछना चाहिए कि इन व्यर्थ की चीज़ों के विषय में तुम क्यों परेशान हो? इनका क्या लाभ है? आपने इसका क्या करना है? जीवन में जब आप इस प्रकार से बातें करने लगेंगे तो आपका विवेक बढ़ेगा और सभी कुछ परिवर्तित होगा। गुरुओं को यह जानना होता है कि उनकी शक्ति कहाँ से आई है। उन्हें आदर्श चरित्र होना है। आपको चाहिए कि मुझे देखें कि मैं किस प्रकार लोगों से बातचीत करती हूँ। उनकी बाधाओं के विषय में जानते हुए भी यह दर्शाती हूँ कि मैं कुछ नहीं जानती। मैं तब तक कुछ नहीं बताती जब तक पकड़ वाले लोगों के हाथ हिलने न लगें और वे असामान्य न हो जाएं। व्यक्तिगत रूप से मैं उन्हें कुछ नहीं बताती। इसी प्रकार से आपको भी ये नहीं कहना चाहिए कि आप भूत बाधित हैं क्योंकि इसका लोगों पर बुरा असर पड़ता है। तीखे उत्तर देने से कोई लाभ नहीं होता। ये बात आपको अच्छी तरह से समझ लेनी चाहिए कि गुरु बनना बिल्कुल भिन्न है। आपको अत्यन्त मधुर एवं विनम्र होना होगा नहीं तो सारे सिरफिरे दौड़ जाएंगे और उन्हें सदमा लगेगा। वो चाहे अच्छे न हों फिर भी उन्हें कहें कि वो बहुत अच्छे हैं। उनसे अत्यन्त प्रेम से बात करें और उन्हें रास्ते पर लाने के लिए सभी कुछ करें। आपको सभी कुछ करना होगा। आज आप सबको शपथ लेनी होगी कि आप गुरु हैं और आपको अपने गुरुपन की अभिव्यक्ति करनी होगी। वापस आकर मैं देखना चाहूंगी कि आप सबने ऐसा किया है। सभी लोग इस कार्य में जुट जाएं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

मेकेबिअन हाल, आस्ट्रेलिया

22.03.1981

सभी सत्य साधकों को मेरा प्रणाम। इस महान् देश में आकर मुझे अत्यन्त खुशी हुई है क्योंकि यहां पर अनगिनत साधक हैं। इस आधुनिक काल में भी इतने साधकों ने जन्म लिया है, इससे पूर्व कभी भी इतनी संख्या में साधकों नें जन्म नहीं लिया। उदाहरण के रूप में ईसा–मसीह के समय में उन्हें लोगों की भीड़ एकत्र करनी पड़ती थी, परन्तु उनमें जिज्ञासा का पूर्ण अभाव था। वे तो बस ईसा की बातें सुना करते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि इसमें कुछ नयापन है। आज वह समय आ गया है जब विश्व भर में बहुत से साधकों ने जन्म लिया है और उनमें जिज्ञासा है। ये वास्तविकता है जिसे व्यक्ति को स्वीकार करना है, इसमें कोई पाखंड नहीं है। कुछ लोगों को इस बात की समझ नहीं है कि जिज्ञासा विद्यमान है और जो भी कार्य वो कर रहे हैं–गलत या ठीक–वास्तव में वे अपने अन्दर खोज रहे हैं।

आज सबसे पहले मैं आपको सहजयोग की रूपरेखा बताऊंगी जिसका अर्थ है: परमात्मा से योग प्राप्त करने की हमारे अन्दर स्वतः होने वाली घटना। इसके विषय में बातें करना बहुत आसान है। कोई भी इसकी बात कर सकता है। पहली बार जब मैं अमेरिका में गई तो लोगों ने कहा कि श्रीमाताजी आप अपने प्रवचनों को अवश्य पेटेंट करवा लें। मैं मुस्करा दी और कहा, क्या बात है? कहने लगे कि लोग आपके शब्दों आदि को अपना उल्लू सीधा करने के लिए प्रयोग करेंगे, हो सकता है कि आपको हानि पहुँचाएं। मैने कहा नहीं, सब ठीक है। उन्हें इसके बारे में बोलने दें क्योंकि ये तो घटित होना ही है, लोगों ने इसके विषय में जानना ही है। इसमें कानूनी एकाधिकार (पेटेंट) लेने की क्या जरूरत है ? सूर्य की रोशनी और सितारों के सौन्दर्य के लिए तो हम कानूनी एकाधिकार नहीं लेते। यह तो सभी के लिए है। मुख्य बात तो यह है कि इन सारे प्रवचनों तथा साहसिक कार्यों का तब तक कोई लाभ नहीं है जब तक जागृति की घटना घटित नहीं हो जाती। आपमें भी यह घटित होनी चाहिए क्योंकि यही वास्तवीकरण है, यही बनना है (Becoming) जो कि महत्वपूर्ण है। इसके विषय में पढ़ने का कोइ अधिक अर्थ नहीं है। यह जीवंत शक्ति ही हमें उच्चव्यक्तित्व बना सकती है,पैगम्बर बना सकती है। विलियम ब्लैक ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि परमात्मा के बन्दे पैगम्बर बन जाएंगे और वो दिन आएगा जब ये पैगम्बर अन्य लोगों को भी पैगम्बर बनाने में सशक्त हो जाएंगे। आज वो दिन आ गया है। विलियम ब्लैक सहजयोग की कार्य शैली को 100 वर्ष पूर्व देख पाए और आज आप लोग इस वास्तवीकरण को देख रहे हैं।

आपके सम्मुख आज शरीर तन्त्र का चार्ट लगाया हुआ है। ये अत्यन्त जटिल चीज है। ये लोग इसे आसान बनाने की कोशिश कर रहे हैं फिर भी यह अत्यन्त जटिल प्रतीत होता है। उदाहरण के रूप में आप कमरे में बैठे हुए हैं परन्तु वहाँ पर बत्ती नहीं है, तो आपको केवल इतना बताना पड़ेगा कि बटन दबाएं और सारी बत्तियाँ जल जाएंगी। परन्तु इस सारी घटना के पीछे बहुत बड़ी तकनीक है और बहुत बड़ी संस्था इस कार्य को कर रही है। ये केवल बटन दबाना मात्र नहीं है। अब मेरी स्थिति यह है कि मैं केवल बटन दबा सकती हूँ, ठीक है, परन्तु लोग इसका पूरा इतिहास और सिर दर्द जानना चाहते हैं! इसलिए मुझे आपके सम्मुख इसका वर्णन करना पड़ता है। यहाँ (त्रिकोणाकार अस्थि) देखें। यह सूक्ष्म शक्ति है–हमारे अन्दर का सूक्ष्म अस्तित्व। यह मानव है जो चेतना की इस अवस्था तक विकसित हो चुका है और उसे यह गतिशील चेतना (Dynamic Awareness)बनना

है। आप यदि कोई यन्त्र बनाने की कोशिश करते हैं, उदाहरण के रूप में ये माइक्रोफोन बनाने का प्रयत्न करते हैं तो लोग आपसे पूछेंगे। जब तक इसको उर्जा के स्रोत से जोड़ा न जाए तो इसका क्या लाभ है ? इसी प्रकार से आपका भी सुन्दर मानव बनने के लिए सृजन किया गया है और आपको शक्ति के स्रोत से जुड़ना है अन्यथा आप अपना पूर्ण मूल्य (पूर्णत्व) नहीं प्राप्त कर सकते।

कुण्डलिनी के विषय में बहुत से लोगों ने बताया है। कहने का अभिप्राय यह है कि उन्होंने एक पुस्तक के बाद दूसरी पुस्तक कुण्डलिनी के विषय में लिखी है। और ये जानकर मुझे सदमा लगा कि कुण्डलिनी के बारे में वे कुछ भी नहीं जानते,किस प्रकार वे इतनी बड़ी बड़ी किताबें लिख सकते हैं ? कहाँ से उन्हें यह ज्ञान प्राप्त हुआ ? कुण्डलिनी अत्यन्त सहज चीज है। हमारे अन्दर यह शुद्ध इच्छा है कि हमें आत्मा से एकरूप होना है। यही शुद्ध इच्छा है। ताकि आत्मा के माध्यम से हम परमात्मा को जान सकें। यह शुद्ध इच्छा,शुद्ध इच्छा की शक्ति कुण्डलिनी रूप में हमारे अन्दर विद्यमान है। पूर्ण अस्तित्व की अभिव्यक्ति हो चुकी है परन्तु कुण्डलिनी अब भी सुप्त अवस्था में है। पूरी तरह से ये यहाँ है। जीव को मानव रूप में सृजन करने के बाद भी यह सुप्त है क्योंकि इच्छा की इस शक्ति को अपनी अभिव्यक्ति करने का अवसर की प्राप्त नहीं हुआ। इस इच्छा शक्ति के विषय में लोग सोचते हैं कि इसे उत्तेजित किया जा सकता है। कुछ लोगों ने तो कुण्डलिनी जागृति के लिए कुण्डलिनी योग के उद्यम आरम्भ कर दिए हैं। यह व्यापार की चीज नहीं है,यह जीवन्त प्रक्रिया है। इसे आप व्यापार में परिवर्तित नहीं कर सकते।

हमारे अन्दर मस्तिष्क है,हम मानव हैं। हमें यह बात समझ लेनी चाहिए कि परमेश्वरी प्रेम को हम पैसे से नहीं खरीद सकते। पैसे की बात करना भी इसका अपमान करना होगा। परमात्मा पैसे को नहीं समझते। ये तो आपका मिथक है,मानव ने इसे बनाया है। परमात्मा नहीं जानते कि पैसा क्या है। इसके लिए आप पैसा नहीं दे सकते और न ही इसे पाने के लिए आप कोई क्रिया कर सकते हैं।फल बनने के लिए फूल न तो कोई प्रयत्न करता है और न ही धन खर्च करता है। बन्दर से मानव बनने के लिए आपने कितना पैसा खर्च किया था ? इसके लिए आपने कितना प्रयत्न किया था। यह सब स्वतः घटित हुआ जैसे अकुंरण तन्तु(Primule)के माध्यम से बीज अंकुरित होता है और फिर वही अंकुरण तन्तु जड़ बनता है और कोंपल बनता है तथा जड़ की नोक पर एक छोटा सा कोशाणु स्वतः खुदाई का सारा कार्य कार्यान्वित करता है। केवल जीवन्त चीजें ही स्वतः कार्यशील हो सकती हैं। अंकुरण से निकली कोंपल विकसित होती हैं, पत्तों का रूप धारण करती हैं उसमें फूल निकलते हैं और फल बनते हैं। इसके सारे अस्तित्व का नक्शा इसी बीज सूक्ष्म रूप से निहित होता है। इसी प्रकार हमारे अन्दर भी अंकुरण तन्तु निहित है, अंकुरित करने वाली शक्ति जिसे कुण्डलिनी कहते हैं और ये शक्ति जो कि हमारे अन्दर साढ़े तीन कुण्डलों में विद्यमान है, इसका बहुत बड़ा गणित है और मेरे विचार से इसकी बातचीत करना उचित न होगा, इसके विषय में हम फिर कभी बात करेगें । कुण्डलिनी की इस स्थिति को समझना आवश्यक है। यह सैक्रम(Secrum) नामक त्रिकोणाकार अस्थि में स्थापित की गई है।सैक्रम शब्द यूनानी भाषा का है। यूनानी लोग ये जानते थे कि यह पवित्र अस्थि है इसलिए उन्होंने इसे सैक्रम नाम दिया। कुछ यूनानी लोग जब आस्ट्रेलिया

आए तो उन्होंने आपकी नदी का चैतन्य अवश्य महसूस किया होगा इसलिए उन्होंने इसे परामाता (Parramatta) नाम दिया। क्या आपने कभी सोचा कि इसका क्या अर्थ है ? इसका अर्थ है आदिशक्ति(Holy Ghost)। परा अर्थात परे, सर्वोच्च सुप्रीम, माता(Matta) अर्थात माँ। कुछ साक्षात्कारी लोगों ने अवश्य इस नदी की चैतन्य लहरियाँ महसूस की होंगी और इसे ये नाम दिया होगा। इसी प्रकार से उन्होंने यह भी महसूस किया होगा कि यह त्रिकोणाकार अस्थि कुछ विशेष है। अन्तिम संस्कार के समय विद्युत दबाब के प्रभाव से जब पूरा शरीर जल जाता है तो अन्त में यह अस्थि जलती है। यह शक्ति इसी अस्थि में है। इस बात को आप अपनी आँखों से देख सकते हैं। आज विश्वविद्यालय में बहुत से विद्यार्थियों ने इसे देखा,त्रिकोणाकार अस्थि में कुण्डलिनी की धड़कन को। क्या आपमें से कोई उछलकूद करके,चीख चिल्लाकर,मन्त्रोचारण से या पैसे खर्चकर यह कार्य कर सकता है ? जो भी कार्य आप करते हैं वह परमेश्वरी कार्य नहीं है। परमात्मा को कुछ ऐसा होना पड़ता है जो मानवीय प्रयत्नों से परे हो। आप छलांग लगा सकते हैं,चिल्ला सकते हैं ये दो सभी कुछ कर सकते परन्तु एक फूल से फल नहीं बना सकते। यह चमत्कार प्रतिदिन देखते हैं, खरबों फूलों को फल रूप में परिवर्तित होना, परन्तु हम इस परिवर्तन को स्वीकार मात्र कर लेते हैं। इसी प्रकार से हमनें अपनी मानवीय चेतना को भी अधिकार समझ लिया है। ये अच्छी बात है अन्यथा हम इसके विषय में सोचने लगते और अपने सिर पर तनाव की एक अन्य गठरी बांध लेते। यह प्रथम चक्र (मूलाधार चक्र) के ऊपर(मूलाधार) में स्थित है।

पहला चक्र मूलाधार कहलाता है। यह भी बहुत बड़ा भ्रम है, आधुनिक काल के सबसे बड़े भ्रमों में से एक। आधुनिक काल अपनी भ्रांतियों के लिए प्रसिद्ध है। भ्रम की स्थिति में ही हमें सत्य को खोजना है, भ्रम के बिना जिज्ञासा नहीं हो सकती। और ये भ्रम एक ऐसी स्थिति में पहुँच चुका है कि हमें कुण्डलिनी के विषय में भी भ्रम हैं। ऐसे भी लोग हैं जिन्होंनें हमारे भ्रम को बढ़ाने के लिए घोर परिश्रम किया है। यह महत्वपूर्ण बात है कि हमारे अन्तःस्थित प्रथम केन्द्र अबोधिता का चक्र है,इस बात को समझा जाना अत्यन्त आवश्यक है, तथा कुण्डलिनी का निवास त्रिकोणाकार अस्थि – मूलाधार में है। अतः इस शक्ति का चक्र कुण्डलिनी के नीचे स्थित है। ये अत्यन्त महत्वपूर्ण बात है जिसे आज मैं आपको बता रही हूँ। हमारे अन्दर अन्तिम चक्र, सातवां चक्र श्रोणीय(Pelvic Plexus) चक्र की अभिव्यक्ति करता है। हमारे अन्दर यह सूक्ष्म केन्द्र है जो पावन अस्थि (Sacrum Bone) के नीचे स्थित है। ये सूक्ष्म केन्द्र है, ये हमारी पौरुष ग्रन्थि (Prostrate Gland) की देखभाल करता है, यह अबोधिता का चक्र है,अबोधिता प्रथम गुण है जिसका सृजन परमात्मा ने इस पृथ्वी पर किया। यह पावनता है, परमात्मा का सौन्दर्य है, प्रेम है। इस पावनता का निवास हमारे अन्दर कुण्डलिनी के नीचे है। इसी हाल में, इसी सभागार में अपने अगले प्रवचन में मैं विस्तृत रूप से इसके विषय में बताऊंगी कि हमारे जीवन के अन्य पक्षों की अभिव्यक्ति ये किस प्रकार करता है। परन्तु यह इतना महत्वपूर्ण क्यों है कि इसको कुण्डलिनी के नीचे स्थापित किया गया है ? क्योंकि हमारी विसर्जन क्रियाएं भी श्रोणीय चक्र द्वारा होती हैं जिसकी अभिव्यक्ति मूलाधार चक्र नामक केन्द्र से होती है। इसका कुण्डलिनी की जागृति से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस तथ्य को जान लेना अत्यन्त

आवश्यक है कि यौन क्रिया का कुण्डलिनी जागृति से कोई सम्बन्ध नहीं है। यौन अभिव्यक्ति यदि आपका योग परमात्मा से करा पाती तो पशुओं का विकास मानव की अपेक्षा कहीं तेजी से होता। हमें सिखाने के लिए पशुओं के पास कुछ भी नहीं है। हम मानव हैं। जो लोग पशुओं से सीखना चाहते हैं वे पशु बन जाएंगे। क्या अब हमनें मेंढक और केंचुए बनना हैं या उच्च व्यक्तित्व मानव ? एक ऐसा व्यक्तित्व जिसका पूर्ण नियन्त्रण हो, जो हर चीज का स्वामी हो। या हमें अपनी समस्याओं का दास बनना है ? नष्ट करने वाली चीजों के सम्मुख यदि हम समर्पण कर देंगे तो किस प्रकार अपने स्वामी बन सकते हैं ? अतः ये बात व्यक्ति को स्पष्ट समझ लेनी चाहिए कि यौन क्रिया का कुण्डलिनी से कोई सरोकार नहीं। ऐसा हो ही नहीं सकता। हमारे सम्मुख ईसा–मसीह का उदाहरण है, मुझे आश्चर्य होता है कि ईसा–मसीह को जानने वाले लोग किस प्रकार ऐसी बेतुकी धारणा को स्वीकार कर सकते हैं कि विकृत यौन क्रियाओं से व्यक्ति का योग परमात्मा से हो जाएगा। अब क्या हम यौन बिन्दु बनने वाले हैं ? क्या हमारे अन्दर जरा सा भी आत्मसम्मान नहीं बचा ताकि हम समझ सकें कि यौन बिन्दु से हम कहीं ऊँचे हैं ? लोगों को नष्ट करने के ये सर्वोत्तम मार्ग हैं, उन्हें प्रलोभित करने का। परन्तु मैं आपको बताती हूँ कि आप लोग साधक हैं, पूरी तरह से साधक। जब तक आप अपनी आत्मा को प्राप्त नहीं कर लेते और कुछ नहीं सुनें। इन सारी मूर्खतापूर्ण चीज़ों से आपको सन्तोष नहीं होगा। मैं जानती हूँ आप वापस आएंगे,एक दिन आप सब वापिस आएंगे। परन्तु तब तक आप इतने नष्ट हो चुके होंगे कि हो सकता है कि मैं भी आपकी सहायता न कर पाऊं। ये बात स्पष्ट रूप से समझ लेनी वाली है कि यौन क्रियाओं का कुण्डलिनी जागृति में कोई सरोकार नहीं। वो आपकी पावन माँ है और व्यक्तिगत रूप से आपके साथ है। अपनी धाराणाओं को भुला दें, अपने संस्कारों (Identifications) को भुला दें। कृपया यह समझने का प्रयत्न करे। वो आपकी माँ है जो युगों से आपको आपका वास्तविक जन्म देने की प्रतीक्षा कर रही हैं। आपके अन्दर आदिशक्ति(Holy Ghost) है। उन्होंने आपको आत्मसाक्षात्कार देना है और इस कार्य के लिए वो प्रतिक्षा किए चली जा रही हैं। कुछ लोगों में मैने देखा है कि उनकी कुण्डलिनी जख्मी सर्पणी की तरह इधर उधर सिर पटक रही होती है और अपना शरीर तोड़ती रहती है। मैने कुछ लोग ऐसे देखे हैं जिनकी कुण्डलिनी में छेद हैं। मूर्खतापूर्ण विचारों तथा हमारे से धन ऐंठने वाले और हमें बेवकूफ बनाने वाले लोगों की बातें सुन सुनकर हमनें इसका कितना नुकसान किया है। कुछ विनाशकारी शक्तियाँ भी पृथ्वी पर अवतरित हो गई हैं। थोड़ी नहीं ऐसी बहुत सी शक्तियाँ और उनकी गति बहुत तेज है। किसी चीज को नष्ट करना बहुत ही आसान होता है। परन्तु किसी चीज की रचना करना, विशेष रूप से किसी जीवन्त चीज की,बहुत ही कठिन कार्य है।हम समझते हैं कि यह कार्य बहुत आसान है अतः एकदम से सम्मोहित हो जाते हैं। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि किसी गुरु के चेले बन जाने मात्र से ही आपकी रक्षा हो जाएगी। किस प्रकार से आपको बचाया जा सकता है ? आपको स्वंय ही उन्नत होना होगा। आपको बनना होगा। यह जानना आपके लिए आवश्यक है कि उन लोगों से आपको कितनी शक्तियाँ प्राप्त हुई है, उन लोगों से जो कहते हैं कि आपको यौन स्वतन्त्रता होनी चाहिए। ये सब तो पशुओं के पास भी है। यौन स्वतन्त्रता

में क्या विशेष है ? मेरी समझ में नहीं आता! कहने से अभिप्राय यह है कि भारत में बिना किसी गुरु के पास गए लोग कितने बच्चे पैदा कर रहे हैं! इसके विपरीत ये गुरु आपको नपुंसक बना देते हैं, यौन क्रियाएं आपको सिखाते हैं ताकि आप यह महसूस करें कि यौन क्रिया ही प्राप्त की जाने वाली बहुत बडी उपलब्धि है। ये कार्य बहुत साधारण है। निसन्देह नपुंसक लोगों के लिए यह बहुत बड़ी उपलब्धि है,परन्तु सामान्य लोगों के लिए यह इतना सरल है जितना अपने स्नानगृह में जाना। इतनी साधारण चीज़ों के लिए इतना बड़ा हंगामा करने की क्या आवश्यक है ? ये चीज़ बहुत आगे बढ़ चुकी है। ये चीज़ें सूझाती हैं कि यौन क्रियाओं से आप कुण्डलिनी को उठा सकते हैं। ये बात ऐसी है जैसे बहुत ही अभद्र तरीके से माँ बच्चे का सम्बन्ध जोड़ा जाना। लोग कह सकते हैं कि फ्रायड ने ऐसा कहा था। मैं तो कहूँगी कि फ्रायड अधपका व्यक्ति था, पूरी तरह अधपका जिसमें विवेक का पूर्ण अभाव था। हो सकता है उसे भी कुछ ऐसी समस्याएं हों। आरम्भ में उसका व्यक्तित्व भी असामान्य था। उसके अतिरिक्त ये सभी मनोवैज्ञानिक हमेशा असामान्य लोगों से ही मिलते हैं। किसी सामान्य व्यक्ति से कभी वो मिलते हैं ? कोई भी सामान्य व्यक्ति मनोवैज्ञानिक के पास क्यों जाएगा ? हमेशा पागल लोग ही उनके पास जाते हैं और ये मनोवैज्ञानिक उनकी बाधाओं ले कर स्वयं भी पगला जाते हैं। फिर वे आपको पागलपन की बातें ही सिखाने लगते हैं।

फ्रायड इतना अधपका था कि वह जीवन का केवल एक ही पक्ष देख पाया, वो नहीं जानता था कि जीवन के और भी कई पक्ष हैं। उसके लिए यौन इतना महत्वपूर्ण हो गया और वह केवल इसका विकृत पक्ष ही देख पाया,जिसके बारे में जानकर हम अचम्भित रह जाते हैं। भारत के गांव में जो लोग सामान्य हैं उनसे यदि आप इस प्रकार की बाते करें तो वो एकदम से कहेंगे कि इस व्यक्ति को क्या कष्ट है। इसे तो किसी पागलखाने में जाना चाहिए।

अब हमें देखना है कि मानव रूप में हमने क्या प्राप्त किया है ? मानव रूप में हम क्या हैं और हमें क्या प्राप्त करना है ? आप यदि इस चित्र में देखें (आप मुझे स्वीकृत रूप में भी नहीं ले सकते) जैसे आज दूरदर्शन वालो ने मुझसे एक प्रश्न किया कि यदि हम सन्देह करेंगे तो क्या आपको बुरा लगेगा ? मैने कहा नहीं। इसके विपरीत मैं तो बहुत प्रसन्न हूँ। आपका सन्देह यह दर्शाता है कि आपने मुझसे प्रश्न पूछने हैं।परन्तु जब झूठमूठ के गुरुओं की बात आती है तो आप आँखें बन्द करके अनुसरण करते हैं। उनसे इतने सम्मोहित हो जाते हैं कि यह भी नहीं सोचते कि क्या कर रहे हैं। आप यह भी नहीं देखते कि अन्य लोगों ने क्या उपलब्धि प्राप्त की है। कुछ लोगों को सड़क पर उछलते हुए देखते हैं और उन्हीं के साथ जा खड़े होते हैं। ये भी नहीं पता लगाना चाहते कि उन्होंने कौन सी शक्तियां प्राप्त की हैं, क्या वे हमसे अच्छी स्थिति में हैं या नहीं,क्या उनकी तकलीफें ठीक हो गई हैं ? आप यदि इन चीज़ों का पता लगाने का प्रयत्न करेगें तो जान जाएंगे कि वे तो भगौड़ी प्रवृत्ति के हैं। मैने देखा है कि कई बार तो उन्हें सब्जियों से भी डर लगता है।उन्हें यदि लहसुन दिखाया जाए तो उससे भी डर जाते हैं। इस प्रकार के कुछ गुरुओं में भी यह समस्या है। वो लोगों से कहते हैं कि आपको लहसुन नहीं खाना क्योंकि उन्हें यदि लहसुन दिखा दिया जाए तो वे उछलने लगते हैं। यह सब क्या है ? क्या हम लहसुन से डरने लगते हैं ? क्या हम इतने बेकार मनुष्य हैं कि हम

इन छोटी मोटी चीज़ों से ही डरते रहें ?

हमारे शरीर की बाईं तरफ इच्छा शक्ति है जो दाईं ओर से आती है। यह मन (Psyche) है जिसके विषय में फ्रायड ने बताया है। वो अन्धा व्यक्ति था जो सभी को विनाश की ओर ले जा रहा था।

शरीर का बायाँ हिस्सा तो हमारा भूतकाल है, हमारे संस्कार(Conditioning) है। यही हमारा अवचेतन मन है। इसमें कोई सन्देह नहीं है कि हमारे अन्दर एक अवचेतन मन भी है। परन्तु केवल यही नहीं है। इसके अतिरिक्त भी बहुत सी चीजें हैं। इस अवचेतनमन का अपने से परे भी एक क्षेत्र है जो सामूहिक अवचेतन (Collective Subconcious) है। यदि व्यक्ति इसमें प्रवेश कर जाए तो यह अत्यन्त भयानक क्षेत्र है। व्यक्ति कैंसर जैसी बीमारी की चपेट में आ सकता है। आप जानते हैं कि सहजयोग में हमने निश्चित रूप से कैंसर ठीक किया है। मैं हैरान थी कि जो लोग कैंसर पीड़ित थे और जो मेरे पास आए वो सब ठीक हो गए। उनमें से अधिकतर में दाईं तरफ की अपेक्षा बाईं तरफ की पकड़ बहुत अधिक थी। एक बार आत्मसाक्षात्कार मिलने के पश्चात् आप स्वयं को पहचान सकते हैं और आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति बन जाते हैं।

दाईं ओर को एक अन्य शक्ति है जो 'क्रिया शक्ति' कहलाती है, आपको किसी चीज़ की इच्छा है तो उसके लिए आपको कार्य करना होगा। यह क्रिया शक्ति है,भविष्य है,भविष्य से आगे अतिचेतन क्षेत्र (Supra conscious Area) है या सामूहिक अतिचेतन(Collective Supra Conscious)। लोगों नें इसकी बातें तो की हैं परन्तु यह नहीं बताया कि हमारे अन्दर ये कहाँ हैं। उन्होंने ईसा–मसीह की बातें की। हमारे अन्दर ईसा–मसीह कहाँ हैं ? उन्होंने कृष्ण के विषय में बोला,कृष्ण हमारे अन्दर कौन से स्थान पर हैं ? इस बात का क्या प्रमाण है कि उनका निवास हमारे अन्दर किसी चक्र विशेष पर है? मध्य में एक अन्य शक्ति विद्यमान है जिसके कारण हम मानव बने। यह विकास–शक्ति (Evolutionary Power), पोषक–शक्ति (Sustenance Power), धर्म –शक्ति (Religious) है। वो धर्म नहीं जो आम लोग समझते हैं। कार्बन की चार संयोजकताएं(Valencies) होती है,स्वर्ण में दाग–रहित रहने का गुण है, इसी प्रकार मानव के अन्दर भी दस पोषक शक्तियाँ है और यह शक्ति जो पोषण करती है जो यह कहती हैं कि यह मानव है, यह मानव का ही गुण है। तो हमारे अन्दर तीन शक्तियाँ हैं, सहजयोग की भाषा में इन्हें सहज बनाने के लिए, इनका वर्णन हम भिन्न नामों से करते हैं। ये तीनों शक्तियाँ हमारे अन्दर विद्यमान हैं। परन्तु मध्य की शक्ति बीच में थोड़ी सी टूटी हुई है, इसके बीच में खाली स्थान है। मध्य की यह शक्ति जिससे हमने उत्थान को प्राप्त करना है, अभी तक स्रोत से जुड़ नहीं पाई। यह तन्तु (Cord)कुण्डलिनी हैं। हमारे हृदय में आत्मा का निवास है। आत्मा हमारे हृदय में निवास करती है, ये सर्वशक्तिमान परमात्मा का प्रतिबिम्ब है।' बिना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किए, बिना इससे जुड़े, सभी धर्म,आप द्वारा किए गए सभी कर्म अर्थहीन हैं। ये तो ऐसे हैं जैसे बिना तार जोड़े किसी को टेलीफोन करना। इस प्रकार तो आप इसे खराब करते हैं। अतः आपको एकतार होना पड़ेगा। आज इन लोगों ने मुझसे एक अन्य दिलचस्प सवाल पूछा , यह हठ –योग के विषय में था। मैने कहा कोई भी हठयोग नहीं कर रहा, बिना किसी विवेक के वे कोई न कोई व्यायाम कर रहे हैं। उनका चित्त क्योंकि शरीर पर है इसलिए वो ये व्यायाम बिना सोचे समझे कर रहे

हैं। पातांजलि का हठ–योग तो ईश्वरीय प्रणिधान प्राप्त करना है अर्थात् सर्वप्रथम परमात्मा को अपने अन्दर स्थापित करना है। सर्वप्रथम आपको उससे जुड़ना है। कुण्डलिनी को उठने दें और फिर जानें की आपके कौन से चक्र पकड़ रहे हैं और आपने कौन से व्यायाम करने हैं। कौन से मंत्र आपके लिए आवश्यक हैं। हमारे देश में बहुत सी महान संस्थाए हैं और सभी स्थानों पर ये लोग मंत्र देते हैं। अब इसके विषय में सोचें। छः चक्र हैं जो मूल केन्द्र हैं। इनके अतिरिक्त भी बहुत से चक्र हैं जिनकी संख्या मैं आपको बताना नहीं चाहती,अन्यथा आप हैरान होंगे। परन्तु छः मुख्य केन्द् हैं और दो बाएं, दाएं पर है–सूर्य और चन्द्र तथा सबसे नीचे सातवां चक्र है (मूलाधार)।

तो आप देख सकते हैं कि 9 चक्र हैं जिन्हें हमने मूलतः समझना है और इन 9 चक्रों पर 9 देवी –देवता भी हैं। तो किसी को आप एक ही मंत्र कैसे दे सकते हैं ? मान लो आपको छः दरवाजे पार करने हैं और आपके पास केवल एक के लिए अनुमति पत्र (Pass) है, केवल पाँचवे दरवाजे के लिए और अभी आप पहले दरवाजे पर हैं,तो आप पाँचवे दरवाजे तक पहुँचेंगे कैसे ? इस बात की समझ इन लोगों को नहीं है। इन लोगों ने ऐसे–ऐसे भयानक मंत्र दिए हैं कि मुझे खेद हुआ। भारतीयों को यदि यह मंत्र बताएंगे तो वे दंग रह जाएंगे। इन मंत्रों में से एक है ठिंगा (अंगूठा)। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि यह भी एक मंत्र हो सकता है ? कितनी हास्यास्पद चीज है ऐसा कहना।'इंगा', 'पिंगा', 'ठिंगा' जैसे व्यर्थ के शब्द मंत्र नहीं हैं, यह तो मूर्खता है। लुटेरों के दल कार्यरत् हैं। वो आते हैं और आपके कान में कहते हैं कि आपने ये मंत्र किसी को नहीं बताना है। ये सुन सुन कर मैं हैरान थी कि एक कुगुरु ने तो डिम्बवाही नली(Fallopian Tube) का भी मंत्र दिया! मैने कहा क्या ? डिम्बवाही नली! ये मंत्र कैसे हो सकते है ? फिर भी हम इसे स्वीकार करते हैं! इसे स्वीकार करते हैं और इसके लिए पैसे भी देते हैं! लोगों ने तो तीन हजार पाउंड दिए और उन्हें एक हफ्ते का खाना दिया गया जिसमें उबले हुए आलुओं का सूप था, तीन हजार पाउंड के बदले। पाँच दिनों तक उन्हें केवल उबले हुए आलुओं का जल दिया गया, एक दिन आलू का छिलका खिलाया गया और एक दिन आलू दिए गये। ये सब उन्हें दुर्बल करने के लिए किया गया ताकि उनके मस्तिष्क काम करना बंद कर दें और उन्हें आसानी से सम्मोहित किया जा सके। इन भयानक लोगों से सावधान रहें। वो जानते हैं कि आप साधक हैं तथा निष्ठापूर्वक खोज रहे हैं। वो ये भी जानते हैं कि आपके पास धन है और ये कह करके वे आपके अहँ को बढ़ावा देते हैं कि तुम्हारे अन्दर धन खर्चने की समर्थ है, तुम्हें धन देना चाहिए। देने के लिए तुम्हारे पास कितना धन हैं ? ये सब निकृष्टतम खून चूसने वाले कीड़े हैं। खून चूसने वाले कीड़े हैं ये, इस बात को याद रखें। एक दिन आएगा जब आप इन्हें पहचान लेंगे लेकिन तब तक गलियों में आपको मिर्गी के दौरे पड़ रहे होंगे और आप सभी प्रकार की भयानक बीमारियों के शिकार हो चुके होंगे। तब आप मेरे पास आएंगे। इस दशा में बहुत से लोग मेरे पास आने भी लगे हैं। मैं आपको चेतावनी देती हूँ कि सावधान हो जाएं और समझ लें कि ये लोग कोई ज्ञान–वान नहीं देते, वे तो आपको सम्मोहित कर रहे हैं। सिर्फ पैसे ऐठने के लिए ही वे ऐसे नहीं कर रहे, वे परमात्मा के साम्राज्य को भी नष्ट करने के लिए कटिबद्ध हैं। वे आप सबको नष्ट करने के लिए कमर कसे हुए हैं क्योंकि वे शैतान हैं और शैतान का साम्राज्य स्थापित करना चाहते हैं। इन सब

चीज़ों को अपना लेना हमारे लिए बहुत आसान है। जैसा मैने आपको बताया पतन की स्थिति में चले जाना बहुत आसान है लेकिन उत्थान को प्राप्त करना बहुत कठिन। उत्थान प्राप्त करना भी इतना कठिन नहीं है। नैसर्गिकता बहुत सहज हैं, अपने कार्य की यदि आपको समझ हो तो इसे कर सकते हैं। कोई सुन्दर सा उद्यान यदि है तो आप आसानी से पता लगा सकते हैं कि इसका कोई माली भी अवश्य होगा जो बाग के कार्य कर रहा है। किसी को यदि कार्य की समझ आ जाए तो वह इस कार्य को कर सकता है।

अब ये मध्य मार्ग वह मार्ग है जिससे व्यक्ति ने उत्थान को पाना है। कुण्डलिनी अतिसूक्ष्म ब्रह्म नाड़ी के बीच में से उठती है। आरम्भ में केवल एक बाल जितना पतला तन्तु उठता है और छेदन करता है। निःसन्देह कुछ लोगों में यह (कुण्डलिनी) बड़े जोरों से उठती है। और तब यह ब्रह्मरंध्र (तालु अस्थि) का छेदन करती है। यह व्यक्ति का सच्चा बपतिस्म होता है। आज पहली बार लोगों ने अपने सिर से बहती हुई शीतल चैतन्य लहरियों को महसूस किया। क्या ये अनुभव आप धन देकर या उछल–कूद करके प्राप्त कर सकते हैं ? उन्हें हाथों पर भी चैतन्य लहरियां महसूस हुईं। बाइबल में भी स्पष्ट लिखा गया है कि यह शीतल चैतन्य लहरियाँ हैं, शीतल चैतन्य लहरियाँ ही आदिशक्ति का चिन्ह हैं। आपको अपने हाथों में और सिर पर शीतल लहरियाँ महसूस होने लगती हैं। यही वास्तवीकरण है। आप लोग अन्य पुस्तकों को नहीं पढ़ते। आदि शंकराचार्य जैसी कुछ पुस्तकें बहुत ही अच्छी हैं। लोग तो उस व्यक्ति का नाम भी नहीं लेना चाहते जिसने स्पष्ट बताया है कि यह शीतल लहरियाँ हैं तथा चैतन्य को अपने हाथों पर शीतल लहरियों के रूप में महसूस किया जाना चाहिए। वो नहीं चाहते कि आपको सत्य का ज्ञान हो। सत्य यही है कि जब आपको आत्मसाक्षात्कार होता है तो आपको अपने हाथों में शीतल लहरियाँ महसूस होनी चाहिएं। आपने स्वयं अपना आंकलन करना हैं। मैं आपको नहीं बताऊंगी। आप ही ने देखना है, आप ही ने महसूस करना है और फिर आप ही ने उन्नत होना हैं और सभी चीजों का ज्ञान प्राप्त करना है, परमेश्वरी विज्ञान के सभी रहस्यों को समझना है। तब आप गुरु बन जाते हैं, अपने स्वामी। आप आत्मा हैं, आपको यह स्थिति प्राप्त होनी ही चाहिए। जो आपको दिया जा रहा है वो आपका अपना हैं। मैने इसमें कुछ नहीं करना, मैं तो मात्र उत्प्रेरक (Catalyst) हूँ। मुझे कहना चाहिए कि ये कार्य आप स्वयं कर सकते हैं, एक बार आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात आप आत्मक्षातकार दे सकते हैं। वारेन और टैरेन्स मेरे पास आए तो इन लोगों को गुरुओं ने निचोड़ा हुआ था और वो बहुत दुखी थे। भारत जाने से पूर्व उसने मुझे अस्ट्रेलिया से फोन किया ' श्रीमाताजी, हमें आपका टेलीफोन मिला, क्या हम आपसे मिलने आ सकते हैं ?' मैं जानती थी वो लोग साधक हैं। तो पहले मैने उनको पकड़ा। आप जानते हैं कि मैं शहरों में कार्य नहीं करती, मैं गाँवों में कार्य करती हूँ क्योंकि गाँवों के लोग आसानी से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेते हैं। उस दिन हम लोग कडु नामक गाँव में थे, वहां पर छः हजार लोगों को आत्मसाक्षात्कार मिला, ये बात अखबारों में भी छापी गई। शहरों में तो ये तथाकथित गुरु कार्य करते हैं क्योंकि उन्हें धन और बटुए की जरूरत होती है जो शहरों में ही मिलते हैं। मैं तो गाँव में कार्य करती हूँ। बेचारे सहज–योगियों को गाँवों में जाना पड़ा जहां पर न तो कायदे के गुसलखाने हैं, नहाने के लिए, तथा अन्य कार्यो के लिए उन्हें नदी पर जाना पड़ता था और आरामपसन्द

अस्ट्रेलिया के लोगों के लिए यह अत्यन्त कठोर कार्य था। परन्तु किसी तरह से उन्होंने चला लिया और उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके जब वो वापिस आए तो पहले ही झटके में उन्होंने तीन सौ लोगों को आत्मसाक्षात्कार दिया। अब तो वे कुण्डलिनी, जागृति और प्रबुद्धता के विषय में बहुत कुछ जानते हैं। साक्षात्कार के बाद ये सब तर्कसंगत है परन्तु इससे पूर्व यह अंधविश्वास है जिसमें व्यक्ति को कोई समझ नहीं होती। कुण्डलिनी विद्यमान है आपके अपने साथ जन्मी हुई है। 'सह' अर्थात् साथ और 'ज' अर्थात् जन्मी हुई। ये आपके साथ जन्म लेती हैं और आपके अन्दर स्थित है, परन्तु केवल अधिकारी व्यक्ति जिसे इसका ज्ञान हो, वही इसे उठा सकता है। क्योंकि मैं इस कार्य को कर रही हूँ इस कारण से किसी को दुख नहीं होना चाहिए। यदि आप इसे कर पाएं तो मुझे बहुत खुशी होगी। आप जानते है कि मैं अपनी गृहस्थी में अत्यन्त प्रसन्न हूँ। मुझे किसी चीज की आवश्यकता नहीं है। मेरे पति ने जगह जगह जाकर इस कार्य को करने की आज्ञा इसलिए दी है क्योंकि वे जानते हैं कि कोई अन्य इस कार्य को नहीं कर सकता। आप यदि इस कार्य को कर सकें तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। वास्तव में मैं इससे निवृत्त होना चाहूंगी। और फिर यदि मै इस कार्य को करती हूँ तो आपको बुरा क्यों लगना चाहिए ? बहुत से ऐसे कार्य भी तो हैं जो मैं बिल्कुल नहीं कर सकती। मैं कार नहीं चला सकती, टाइप नहीं कर सकती, आपके डिब्बे तक खोलने मुझे नहीं आते। इन सभी कार्यों में मैं एकदम से बेकार हूँ। तो यदि मुझे कुण्डलिनी जागृत करने का ज्ञान है तो आपको बुरा क्यों लगना चाहिए। स्वंय को पहचानना और अपने अन्दर जागृति को प्राप्त करना आपका अधिकार है ताकि आप सच्चा बपतिस्म, सच्ची शक्ति प्राप्त कर सकें। एक बार जब आप इसे प्राप्त कर लेंगे तो सर्वप्रथम तो आपका व्यक्तित्व ही बिल्कुल बदल जाएगा। आप कुछ भिन्न ही चीज बन जाएगें।

उस दिन सिंगापुर में एक वृद्ध सज्जन बहुत समय बाद मुझे मिले। कहने लगे, " श्रीमाताजी आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् अभी मैं इसमें पूरी तरह से उतरा भी न था कि मुझमें एक चीज घटित हुई , " मैने जुआ खेलना, सिगरेट और शराब पीना छोड़ दिया। ये मेरे साथ क्या हुआ" ? मैने कहा जब आपको सत्य प्राप्त हो जाता है तो आप यह सब चीज़ें छोड़ देते हैं। सच्चा रत्न मिल जाने पर बनावटी पत्थर त्याग दिए जाते हैं। जीवन से उब कर, जीवन क्योंकि आपको उबाऊ लगता है, मनुष्य क्योंकि उबाऊ लगते हैं और अरुचिपूर्ण प्रतीत होते हैं, तनावों, क्रूरता तथा समस्याओं से परिपूर्ण लगते हैं इसलिए आप इन चीज़ों (नशे आदि) को अपना लेते हैं। परन्तु एक बार जब आपको अपना पूर्णत्व प्राप्त हो जाता है तो आपमें पूर्ण सुरक्षा की भावना स्थापित हो जाती है और जिस आनन्द, खुशी एवम् कृपा का वचन आपको दिया गया है वह आपके अन्दर बहनी शुरु हो जाती है। आपको अत्यन्त शान्ति का अहसास होता है। इसके अतिरिक्त आपके साथ बहुत सी चीज़ें घटित होने लगती हैं। इसके विषय में एक ही प्रवचन में बता पाना कठिन है। आपके सम्मुख मैं और भी प्रवचन दूंगी। पहली चीज जो घटित होती है वो यह है कि आपका स्वास्थ्य ठीक हो जाता है। ऐसा नहीं है कि मैं इस उद्यम को शुरु करने के लिए अस्पतालों में जा जाकर रोगियों को खोजने वाली हूँ , ठीक है, इतना पैसा दे दो और आपका यह रोग ठीक हो जाएगा।" नहीं, मैं नहीं जानती कि मैं कितने लोगों को ठीक

कर चुकी हूँ। विश्वास करें कि मैं वास्तव में नहीं जानती। मैं यह भी नहीं जानती कि मेरे शिष्यों ने कितने लोगों को रोग–मुक्त किया है। ये तो सूर्य किरणों की तरह हैं जिन्हें इस बात का ज्ञान नहीं होता कि उनके कारण कितने पत्तों में हरियाली आयी है। जिन लोगों से आप प्रेम करते हैं या जिन्हें आप भोजन देते हैं उनका आप हिसाब किताब नहीं रखते। किसको आपने कितने निवाले खिलाए हैं क्या आप उनकी गिनती करते हैं ? यह प्रेम है। आपको प्रमाण किसलिए चाहिए ? क्यों प्रमाण चाहिए, आप मुझे कोई पैसा तो दे नहीं रहे? सूर्य किरणों का आप कोई प्रमाण चाहते हैं ? आप मुझे कुछ नहीं दे रहे और न ही मैं कुछ बेच रही हूँ। दुकानदारी नहीं हो रही है! आपने यह तोहफा पाना है। आपने इसे प्राप्त करना है तो क्यों आप मेरा आंकलन करना चाहते हैं ? आपको यदि नहीं मिला है तो बेहतर होगा इसके लिए प्रयत्न करें। मेरे बारे जानकर आपको क्या लाभ होने वाला है। मुझे समझ पाना आसान नहीं है। यह कार्य बहुत कठिन है। मैं इतनी भ्रांति रूप हूँ। मुझे जानना कठिन है, बेहतर होगा कि आप स्वंय को जानें, उससे आप सीख पाएंगे। जब तक आप स्वंय को नहीं पहचान लेते मुझे नहीं पहचान सकते। अतः मुझसे उलझन पूर्ण प्रश्न पूछने का कोई लाभ नहीं। मैं आपको कुछ नहीं बता पाऊंगी क्योंकि अब मैं बहुत चतुर हो गई हूँ। कृष्ण ने केवल अर्जुन को बताया था। उसने कहा था सभी कुछ त्याग कर मेरे बताए हुए मार्ग पर चलो। श्रीकृष्ण ने कहा योग प्राप्त करने के बाद आपको क्षेम प्राप्त होगा, इससे पूर्व नहीं। आपको सभी प्रकार का ,शारीरिक,मानसिक,भावनात्मक, भौतिक और सामाजिक क्षेम प्राप्त हो जाता है। अध्यात्मिक क्षेम भी आपको प्राप्त हो जाता है। उन्होंने कहा कि योग प्राप्ति के बाद यह सब घटित होगा इससे पूर्व नहीं। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेने के पश्चात् आपके साथ भी यह घटित होगा। आज आप यदि इसे प्राप्त नहीं करते तो भी मैं निराश नहीं होऊंगी। इस महान इंग्लैंड में जिसे कि विलियम ब्लैक ने येरुशलम कहा है,मुझे बहुत कठिन परिश्रम करना पड़ा। केवल चार लोगों पर मैने छह वर्ष तक कार्य किया। क्या आप इस बात पर विश्वास करेंगे ? लोहे के चने चबाने जैसा है। परन्तु एक बार जब उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया तो तूफान सा आ गया और अब हमारे पास हजारों आत्मसाक्षात्कारी लोग हैं। निःसन्देह हम इनका कोई लेखा जोखा नहीं रखते। कोई संस्था नहीं है,कुछ भी नहीं है। आप उन्हें अपनी चैतन्य लहरियों के माध्यम से पहचान सकते हैं कि वे आत्मसाक्षात्कारी हैं या नहीं। क्योंकि आप सामूहिक चेतना में आ जाते हैं, हाँ,बार बार मैं यह बात कहती हूँ कि यह बनना है। आप अपने को तथा अन्य लोगों को महसूस करने लगते हैं। यह बात महत्वपूर्ण है, पूरी तरह से महत्वपूर्ण। अब आपने इसे प्राप्त करना है आज नहीं तो कल। तो आज ही इसे प्राप्त कर लेने का विचार बहुत अच्छा है। परन्तु पा लेने के बाद, जैसे ईसा मसीह ने कहा था, कुछ बीज चट्टानों पर गिर जाते हैं। यहाँ भी ऐसा ही होता है। आपने इसको संभालना है, बढ़ाना है, इसमें कुशलता प्राप्त करनी है और स्वयं गुरु बनना है। आज सुबह जैसे मैंने आपको बताया था, इन अगुरुओं से जाकर अपना धन वापस मांगें। ये समझने का यह सर्वोत्तम उपाय है कि यह चीज तार्किकता से परे है। मैं असीम की बात कर रही हूँ, हमारी तार्किकता सीमित है। हमारे मस्तिष्क सीमित हैं। परन्तु बहुत सी चीजें समझी जा सकती हैं। बहुत से लोग इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुण्डलिनी जागृति द्वारा ही

आत्मसाक्षात्कार पाया जा सकता है। अपने सीमित मस्तिष्क द्वारा वे इस परिणाम पर पहुँचे। उन्होंने बहुत से निष्कर्ष निकाले। श्रीमान फ्रायड का शिष्य(Jung) युंग इतना संवेदनशील व्यक्ति था कि उसने कहा कि आपको अवश्य आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना है, आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना ही है, और इस तरह से उसने सहजयोग के लिए आधार तैयार किया। उसने कहा कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके आप सामूहिक चेतना में आ जाएंगे। उसने इसकी बात की। अतः हमें समझना है कि इसके विषय में बताने वाली मैं पहली व्यक्ति नहीं हूँ। सभी महान संतों, अवतरणों और पैगम्बरों ने इसके विषय में बताया। मोहम्मद साहब ने कहा कि आपको पीर बनना होगा। परन्तु आप जानते हैं कि अब वे धर्म से क्या खिलवाड़ कर रहे हैं! मैं विवाद में नहीं पड़ना चाहती। परन्तु आप लोग स्वयं इस बात का निर्णय कर सकते हैं कि इन महान अवतरणों का उन्होंने क्या किया। आप चाहे उन्हें सर्वोत्तम और सर्वोच्च चीज दे दें, वो जानते हैं कि इसे किस तरह बिगाड़ना है जैसे हिन्दुओं को बताया गया कि आत्मा का निवास शरीर के अन्दर है, तो जन्म के आधार पर जाति प्रथा बनाने का उन्हें क्या अधिकार था ? वास्तव में जाति का अर्थ तो है जन्म से आए संस्कार । उदाहरण के रूप में आप ब्राह्मण हैं क्योंकि आप साधक हैं ,ब्रह्म को खोज रहे हैं इसलिए आप ब्राह्मण हैं। सत्ता को खोजने वाले, चाहे वह चुनावों से हो, क्षत्रिय हैं। यह तो व्यक्तित्व की वृत्तियां हैं जो व्यक्ति की जाति का निर्णय करती हैं। गीता के लेखक व्यास एक मछुआरिन के नाजायज़ बच्चे थे। वो कैसे कह सकते थे कि आप ब्राह्मण परिवार के हैं। जाति तो योग्यता है,श्रेणी है। आप लोग भी उसी तरह के साधकों की श्रेणी में हैं। आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने वाले हैं इसीलिए आप ब्राह्मण हैं और यह जाति कहीं भी हो सकती है। यह इस्लामिक संसार में हो सकती है, इस्लामिक देशों में हो सकती है, चीन में हो सकती है,रूस में हो सकती है,इंग्लैंड और अमेरिका में हो सकती है। मेरे पति की नौकरी के कारण मैं इन सब देशों में गई। मैं हैरान थी। मैंने रूसी लोगो को भी आत्मसाक्षात्कार दिया है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति के लिए वो बहुत अच्छे हैं। परन्तु इस सीमा तक समझने में वो बहुत समय लेंगे। आप लोग क्योंकि वास्तव में स्वतन्त्र हैं, आप लोग स्वतन्त्र हैं, प्रजातान्त्रिक हैं अतः सहजयोग को समझने के लिए, इसमें महान ऊँचाइयाँ प्राप्त करने के लिए आपके पास खुला मस्तिष्क है। फिर भी मैं कहूँगी कि स्वतन्त्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं है। इसका यह अर्थ बिल्कुल भी नहीं है। हवाई जहाज के सभी पुरजे यदि स्वच्छंद होना चाहें तो उस हवाई जहाज का क्या हश्र होगा। हम एक ही विराट के अंग प्रत्यंग हैं। एक ही आदि पुरुष , एक ही ब्राह्मण के हम अणु हैं। हमे स्वयं को विराट से जोड़ना है, अपना सम्बन्ध, सहयोग और प्रेम भिन्न अणुओं से खोज निकालना है।

अंत में मैं कहूँगी कि यह परमात्मा का दिव्य प्रेम है, परमात्मा की कृपा है जिसने आपको मानव योनि दी और उनकी कृपा ही आपको श्रेष्ठ मानव बनाएगी। वो चाहते हैं कि यह शक्ति आपके माध्यम से बहे। इसलिए वे आपको श्रीकृष्ण की बाँसुरी की तरह से खोखले व्यक्तित्व का बनाना चाहते हैं ताकि आप उनकी शक्तियों को महसूस कर सकें और उनका संचालन कर सकें तथा परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश कर सकें। वे ही प्रेम के सागर हैं। वे आपके सभी अपराधों को क्षमा करते हैं। हममें कौन से दोष हो सकते हैं , कौन से पाप हम कर सकते हैं ? आप तो नन्हें पक्षियों की तरह से हैं जो कहीं से

छोटा सा तिनका उठा लाने के लिए स्वंय को दोषी महसूस करता है। वे प्रेममय पिता हैं, क्षमा के सागर हैं। वह हमें पूर्णतयाः स्वच्छ कर देते हैं। अपना सौन्दर्य प्रदान करते हैं और आप उनके अपने बच्चे बन जाते हैं, जिन्हें उन्होंने अपनी शक्तियां, अपना सौन्दर्य और अपनी गरिमा प्रदान की है!

परमात्मा आपको धन्य करें।

विवेक प्राप्ति

(केवल विवेक का अर्थ समझ लेने पर)

आपके नौकर, ड्राइवर आदि के रूप में आपको कोई विवेकशील व्यक्ति मिल जाता है तो आप हैरान हो जाते हैं कि किस प्रकार ये इतना विवेकशील हो सकता है! सम्भवतः अपने पूर्व जन्म में ही उसने अपने अन्दर यह विवेक पा लिया हो या इसकी गहनता में जाकर इसे पाया हो।

विवेक किसी एक व्यक्ति मात्र के अवस्था या सम्पत्ति नहीं है। बहुत से व्यक्ति विवेकशील हो सकते हैं। अतः सहजयोगी वही है जिसने विवेक प्राप्त कर लिया है। उन्हें ऐसे प्रश्न नहीं पूछने कि आप ऐसा क्यों कह रहे हैं, इसकी क्या आवश्यकता है ? उन्हें प्रश्न नहीं पूछनें। वो तो गलती करते ही नहीं ,गलत कार्य करते ही नहीं ,हमेशा ठीक मार्ग पर होते हैं। मेरा मानना है कि सहजयोगी का यही चिन्ह है और यही देवी का आर्शीवाद भी है। देवी की शक्ति यदि आपके अन्दर कार्यरत् है तो आपको चीज़ों को कार्यन्वित करने का विवेक प्राप्त हो जाएगा।

नवरात्रि पूजा–2002

विवेक ऐसा गुण है जो सर्वप्रथम आपको पूर्ण शान्ति प्रदान करता है। विवेक विकसित हो जाने पर आप अत्यन्त शान्त हो जाते हैं। लोग जो चाहे कहते रहें, करते रहें, जितने चाहे आक्रामक हो, हर हाल में आप शान्त रहते हैं तथा लोगों तथा राष्ट्रों की मूर्खता को देखते हैं और इस बात को समझते हैं कि क्यों वे यह मूर्खता कर रहे हैं।

नवरात्रि पूजा–1998

विवेक का अर्थ यह नहीं है कि आप चीज़ों के विषय में वाद–विवाद करें या लोगों से झगड़ें। नहीं, इसका ये अर्थ बिल्कुल नहीं है। चीज़ों के उत्तम पक्ष को अपनाना और उनका आनन्द लेना ही विवेक है। यही विवेक है और इसमें आप विनाशकारी चीज़ों से हटकर रचनात्मकता को अपनाते हैं।

हंसा चक्र पूजा–1992

सहजयोगी के जीवन में विवेक की भूमिका ऐसी होती है कि बाहर चाहे जो भी होता रहे, जो चाहे फैशन हो, जो चाहे विचारधारा हो, जैसे चाहे लोग परिवर्तित हो रहे हों, आप उनके अनुसार परिवर्तित नहीं होते। आपके अन्दर परिवर्तन होता है।

श्री गणेश पूजा,1991 पुणे

ध्यान एक मात्र मार्ग है। अपने बाएं और दाएं को त्याग कर अपने विवेक तथा अपने अस्तित्व का आनन्द लेते हुए आप मध्य में खड़े हुए हैं।

श्री गणेश पूजा,1991 पुणे

विवेक बाहर नहीं दिखाई देता। किसी व्यक्ति को देखने मात्र से आप यह नहीं कह सकते कि वह विवेकशील है,परन्तु चैतन्य लहरियों द्वारा आप यह जान जाएंगे कि व्यक्ति अत्यन्त विवेकशील हैं वह व्यक्ति बोले या न बोले। वह यदि बोलेगा तो बिना किसी को चोट पहुँचाए कोई अत्यन्त गहन, विवेकशील एवं अच्छी बात कहेगा।

नवरात्रि पूजा,1998

विवेक ये मान लेना मात्र नहीं है कि मैं विवेकशील हूँ। विवेक तो अपनी अभिव्यक्ति करता है,चीज़ों को कार्यन्वित करता है और दर्शाता है कि अच्छा क्या है और बुरा क्या हैं।

नवरात्रि पूजा,2002

विवेक उस व्यक्ति का चिन्ह है जो वास्तव में उच्च

स्तर का आत्मसाक्षात्कारी है। आपमें यदि विवेक नहीं है तो जो चाहे आप करें, अपने कार्यों से जितने मर्जी सन्तुष्ट हों परन्तु विवेक का होना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

नवरात्रि पूजा–2002

क्या मैं विवेकशील हूँ? परमात्मा कि कृपा का यह पहला चिन्ह है। परमात्मा कि कृपा जिस पर है वह व्यक्ति विवेकशील होता है और उसके मौन से उसका विवेक झलकता है। परमात्मा की पूर्ण शक्ति ऐसे व्यक्ति को माध्यम के रूप में उपयोग करती है और आश्चार्यजनक रूप से कार्य करती हैं। व्यक्ति आश्चर्यचकित हो जाता है कि यह सब कैसे घटित हो गया।

किसी महिला को भी विवेक प्राप्त हो सकता है और पुरुष को भी। कोई भी यह विवेक, यह गहनता, यह स्वभाव प्राप्त कर सकता है जो अत्यन्त सुन्दर है और अत्यन्त शक्तिशाली है।

नवरात्रि पूजा,2002

विवेक आपमें स्वतः आता है,परन्तु अनुभव के माध्यम से। तब आप समझते हैं कि यह ठीक मार्ग है। अनुभव से ही आप समझने लगते हैं।

हंसा पूजा,1992

मानव.....किसी भी बात को सीधे से नहीं समझेंगे। अतः जब तक वो ये समझ न लें कि यह श्रीमाताजी की लीला है जो हमें विवेक के तट पर ले आई है, चीज़ों को घुमा फिरा कर बताना पड़ता है।

नवरात्रि पूजा,1998

श्री गणेश का प्रथम गुण यह है कि वे हमें विवेक प्रदान करते हैं और वह विवेक हमें व्यवहार करने की समझ देता है, सन्तुलन प्रदान करता है, अपने साथ व्यवहार करना, अपनी रक्षा करना तथा अपना सम्मान करना सिखाता है।

श्री गणेश पूजा,1991 अस्ट्रेलिया

श्री गणेश विवेक के दाता हैं। वो हमें सिखाते हैं कि किस समय कैसा व्यवहार करना है, किस समय कैसा बोलना है, किस मामले में किस सीमा तक जाना है। ये सारे गुण अर्न्तजात हो जाने चाहिए – सहज।

इन्हें कार्यान्वित करने की आवश्यकता नहीं होनी चाहिए, आपके अन्दर इनका ज्ञान होना चाहिए।

"अब मैं सहजयोगिनी हूँ।" हर सुबह स्वयं को ये बताएं कि, "मैं सहजयोगिनी हूँ। मुझे किस सीमा तक जाना है? मेरा व्यवहार कैसा होना चाहिए ? मेरा दृष्टिकोण कैसा होना चाहिए ?" यह विवेक कमल यदि आप में खिल उठे तो इन बातों को आसानी से समझा जा सकता है।

कमल कैसे खिलता है ? बीज अंकुरित होता है.....। आपमें भी यह बीज निहित है। अब सबमें यह बीज विद्यमान है। अब क्योंकि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं इसीलिए यह कमल खिलने लगा है। विवेकशीलता को अपनी लगामें थाम लेने दें.....।

ऐसे करने का एक अत्यंत आसान तरीका है – विवेक के सम्मुख सगर्पण कर दें और आपके अन्तःस्थित विवेक गतिशील हो उठेगा। ये कार्य करेंगा।

दिवाली पूजा, 1991

जो लोग ध्यान–धारण नहीं करते वो सहजयोग में खो जाएंगे क्योंकि विवेक तो केवल आपकी आन्तरिक

प्रेरणा से ही उन्नत हो सकता हैं और यह आन्तरिक प्रेरणा आपको तभी मिल सकती है जब आपके अन्दर श्री गणेश की शक्ति की अभिव्यक्ति हो। वही विवेक के दाता है।

श्री गणेश पूजा,1998

यह कहना अति कठिन है कि विवेकशील कैसे बनें। यह घटना तो बस घटित हो जाती है और आप विवेकशील हो जाते हैं। अतः बालक होते हुए भी श्री गणेश अत्यन्त परिपक्व हैं। वे अत्यन्त विवेकशील हैं। केवल इतना ही नहीं, वे विवेक प्रवाहित करते हैं और जो भी व्यक्ति सहजयोगी हैं, विवेक उसका अर्न्तजात गुण हैं क्योंकि उसके अन्दर भी श्री गणेश जागृत हो चुके हैं।

अतः वह विवेकशील हो जाता है, अत्यन्त विवेकशील। अपने विवेक से वह क्या प्राप्त करता है– सन्तुलन, सच्ची उत्क्रान्ति और उसे समझ आ जाती है कि ये उत्क्रान्ति उसके अपने, उसके देश के तथा पूरे विश्व के हित के लिए है। सहजयोग का महत्व उसकी समझ में आ जाता है।

बिना विवेक के व्यक्ति ये सब नहीं समझ सकता। यह विवेक हमारे अन्दर है, पूरी तरह से । अर्न्तजात रूप से स्थापित है। हमें तो केवल अपने अन्तः स्थित विवेक के भण्डार का उपयोग करना है।

श्री गणेश पूजा,1991पुणे

कोई भी पूछ सकता है," श्रीमाताजी इस विवेक का स्रोत क्या हैं ?" श्री गणेश इसके स्रोत हैं...। श्री गणेश यदि अपमानित हो जाएं तो वे अन्धकार के बादलों के पीछे छुप जाते हैं। ऐसी स्थिति में लोग मूर्खतापूर्ण कार्य करने लगते हैं।

श्री गणेश पूजा,1993 जर्मनी

आपको विवेक प्रदान करना देवी का महानतम् वरदान हैं। आप इसे चेतना भी कह सकते हैं या कुछ और भी। इस विवेक के द्वारा ही आप पूर्णतः दिव्य व्यक्तित्व बन जाते हैं। अपनी भक्ति द्वारा आपको यह विवेक प्राप्त कर लेना चाहिए।

नवरात्रि पूजा, 2002

परमात्मा को आपकी आवश्यकता है। वो नहीं चाहते कि आपकी मृत्यु हो जाए या आप समाप्त हो जाएं। उन्हें आपकी बहुत आवश्यकता है। परमेश्वरी शक्ति ने बहुत से कार्य करने हैं और आप उसके माध्यम हैं।

नवरात्रि पूजा,2002

विवेक.....अत्यन्त अर्न्तजात गुण हैं, अत्यन्त अर्न्तजात। ये दर्शाता है कि किसी भी शक्ति की तरह यह सूझबूझ की शक्ति है जिसे देवी की शक्ति का क्षेम प्राप्त है।

अतः वे (देवी) विवेक की दाता है। देवी का ये महानतम् गुण है कि वे विवेक की दाता हैं। उत्क्रान्ति प्रक्रिया के एक भाग के रूप में विवेक का उदय होता है।

अभी तक की सारी उत्क्रान्ति उन्होंने (देवी ने) की है। और अब आगे बढ़ाने के लिए वे आपको अत्यन्त विवेकशील बनाने वाली हैं।

नवरात्रि पूजा,2002

वो लोग अत्यन्त भाग्यशाली हैं जिन्हें विवेक प्राप्त हो गया है, परन्तु विवेक जीवन के प्रति अपनी सूझबूझ के अतिरिक्त किसी अन्य स्रोत से प्राप्त नहीं होता। व्यक्ति जब सोचने लगता है कि, " अब मैं ऐसा क्यों कर रहा हूँ ? मेरे इस कार्य का क्या प्रभाव होगा ? मेरे आचरण का परिणाम क्या है ? ये मेरे लिए अच्छा है या बुरा, केवल तभी विवेक

आता है।"

श्री गणेश पूजा1993, जर्मनी

वही व्यक्ति शक्तिशाली है जिसे केवल उचित, अनुचित का ज्ञान नहीं है, बल्कि जिसमें अनुचित कार्य को न करने की शक्ति भी है। गलत कार्य को वह करता ही नहीं।

हमारे अन्दर विवेक ऐसी पूर्ण शक्ति हैं जिससे हम कोई प्रयोग नहीं करते। यह तो हमारे माध्यम से स्वतः कार्य करती है और हम केवल उन्हीं कार्यो को करते हैं जो ठीक हैं और उचित हैं।

श्री गणेश पूजा,1993 जर्मनी

आपकी अबोधिता अपने आप में ही एक शक्ति है और यह निश्चित रूप से आपको वह विवेक प्रदान करेगी जिससे आप सभी समस्याएं सुगमतापूर्वक सुलझा सकें।

श्री गणेश पूजा,1990

विवेक निर्लिप्तता प्रदान करता है, स्वार्थ से, स्वंय तक सीमित रहने से, अहँ से तथा स्वंय से जुड़े सभी भावों से। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं।

दिवाली पूजा 1991

क्यों न ऐसा व्यक्तित्व विकसित कर लिया जाए कि, " मैं सदैव आनन्द में हूँ। किसी भी चीज को देखकर मैं आनन्दविभोर हो जाता हूँ। किसी को भी सुनते हुए मैं 'आपको' महसूस करता हूँ।" तब आपका सुगन्ध कमल सुधरेगा और सौन्दर्य को आत्मसात करने के लिए आपका विवेक गतिशील हो उठेगा। सभी कुछ अत्यन्त सन्तोष तथा आनन्दायी सभी कुछ आपको प्राप्त हो जाएगा।

आपके अन्दर विवेक का यह ऐसा कार्य है जो आपको अच्छे–अच्छे लोगों, सुन्दर परिस्थितियों की ओर ले जाएगा जहाँ आप सुन्दर चीज़ें या सुन्दर कृतियाँ खोज निकालेंगे, ऐसी चीज़ें जिनकी कभी आपने आशा भी न की थी।

यह समझ लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि आप मुझे बताएं, " श्रीमाताजी यह चमत्कार हुआ, वह चमत्कार हुआ" आपके विवेक के अतिरिक्त यह कुछ भी नहीं हैं। आपकी आत्मा कार्य कर रही है। आपको कुछ भी नहीं करना।

दिवाली पूजा, 1991

हमें समझना हैं कि विवेक ऐसा गुण नहीं है जिसे हम अन्तर्निविष्ट(Inculcate)कर सकें। यह ऐसा गुण नहीं है जिसे चतुराई से स्थापित किया जा सके(Manoeuvered)यह तो अत्यन्त अर्न्तजात और हमारे परिपक्व होने पर ही आता हैं

श्री गणेश पूजा, काल्वे 1991

इस स्तर तक पहुँचना हैं, जहां आप समझ जाएं कि आपने विवेक प्राप्त करना हैं। आपमें यदि विवेक का अभाव है तो आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति नहीं हैं।

श्री कष्ण पूजा, 2000

आपकी आत्मा को कोई समस्या नहीं हो सकती। इसे कोई भय नहीं हैं। सर्वोपरि ,इसमें विवेक है, अथाह विवेक। यही विवेक आपके व्यक्तित्व की बुलन्दी का भी चिन्ह हैं।

जैसे मैने आपको बताया था, यह उत्क्रान्ति हैं। जब आप परिवर्तित (Transformed) हो जाते हैं तो आपकी उत्क्रान्ति हो जाती है। आपका स्वभाव बिल्कुल भिन्न हो जाता है और आप अतिविशिष्ट

बन जाते हैं।

श्री कृष्ण पूजा, 2000

आपने यदि स्वयं को पहचाना है तो आपके अन्दर साहस की शक्तियाँ आ जाएंगी। आप दुस्साहसी नहीं बनेंगे,विवेकशील होंगे। साहस के साथ आपको विवेक भी प्राप्त हो जाएगा। आपकी आत्मा आपको प्रचुर मात्रा में उत्साह एवं विवेक प्रदान करेगी। यह न तो लड़ाकापन हैं और न हिंसात्मक स्वभाव। ये अपरिपक्व स्वभाव भी नहीं हैं, यह तो अत्यन्त शान्त ,सुन्दर एवं साहसपूर्ण नजरिया है।

जन्मदिवस पूजा,2001

प्रतिबोधविदितं मतममृतत्वु हि विन्दते
आत्मना विन्दते वीर्य विद्या विदतमृतम्

केनोपनिशद(2/4)

ज्ञान वही है जिसके माध्म से व्यक्ति अमृत्व प्रदान करने वाली आत्मा का बोध प्राप्त कर सके।

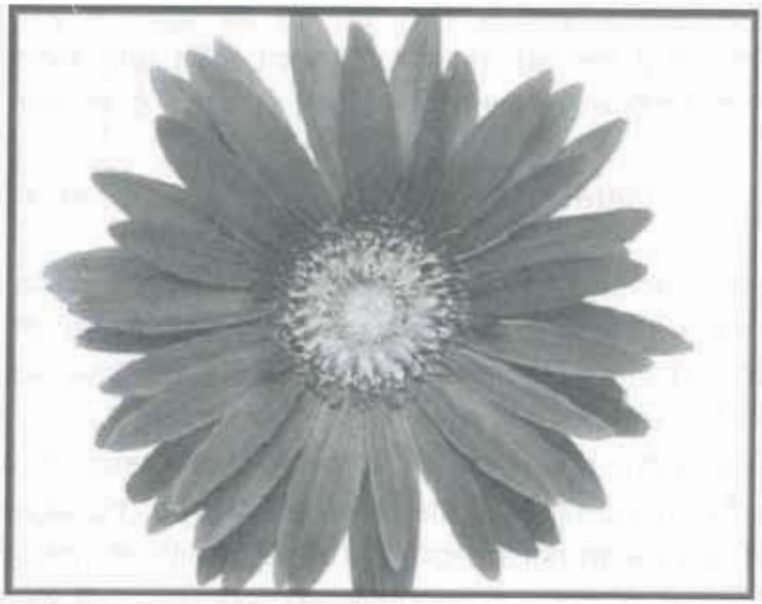

चैतन्य लहरियाँ

हमारे हृदय में एक ज्योति है जो निरन्तर जलती रहती है। ये आत्मा हैं, हमारे हृदय में परमात्मा का प्रतिबिम्ब। कुण्डलिनी जब उठती है तो ब्रह्मरन्ध्र को खोलती है। श्री सदाशिव की पीठ (seat) सहस्रार में हैं, परन्तु सदाशिव आत्मा के रूप में हृदय में प्रतिबिम्बित है। पीठ का सृजन इसलिए किया गया है क्योंकि यह सर्वव्यापी सूक्ष्म शक्ति को धारण करता है।

इसी प्रकार से मस्तिष्क में पीठ हैं और सदाशिव का पीठ सहस्रार में सर्वोच्च है। सहस्रार खुलता हैं ताकि यह सूक्ष्म शक्ति सूक्ष्म वाहिका के रास्ते हमारे हृदय में उतर सके। गैस के प्रकाश की तरह से इसमें भी टिमटिमाहट है।(गैस जब खुलती है तो प्रकाश होता है। चैतन्य लहरियाँ हमारे अन्दर से इस सूक्ष्म शक्ति का प्रवाह हैं। हमारी कुण्डलिनी जब ब्रह्मरन्ध्र को पार करती हैं तो हमारे अन्दर से चैतन्य लहरियाँ बहने लगती हैं।

चैतन्य लहरियाँ हमें पूर्ण सन्तुलन प्रदान करती हैं, हमारे शारीरिक,मानसिक और भावनात्मक विकारों को दूर करती हैं। ये हमें परमात्मा से पूर्ण आध्यात्मिक एकाकारिता का विवेक प्रदान करती हैं। ये हमें पूर्ण सामन्जस्य प्रदान करती हैं।

श्री माताजी

(महाअवतार–1980)

लक्ष्मी तत्त्व

परम पूज्यमाताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

कृष्ण ने गीता में कहा है कि ' योगक्षेम वहाम्यहम' । इसका मतलब है– पहले योग। पहले वो क्षेम कहते, (पर) पहले उन्होंने ' योग' कहा, और उसके बाद ' क्षेम'। क्षेम का मतलब होता है, आपका well-being आपका लक्ष्मी तत्त्व। तो पहले योग होना चाहिये।

जब तक योग नहीं होता तब तक परमात्मा से आपसे कोई मतलब नहीं। आपको पहले योग, माने 'परमात्मा से मिलन' होना चाहिये, आपके अन्दर आत्मा जागृत होनी चाहिये। जब आपके अन्दर आत्मा जागृत हो जाती है, तब आप परमात्मा के दरबार में असल में जाते हैं, नहीं तो आप रट्टू तोते के जैसे कहा करते हैं। जो कुछ भी बात होती है, बाहर ही रह जाती है। अन्दर का आपा जब तक आप जानते नहीं, जब तक आप अपने को पहचानते नहीं,तब तक आप परमात्मा के राज्य में आते नहीं और इसीलिये आप उसके अधिकारी नहीं हैं जो परमात्मा ने कहा है।

बहुत से लोग परमात्मा को इसका दोष देते हैं, कि हम तो इतनी परमात्मा की भक्ति कर रहे हैं, इतनी हम पूजा कर रहे हैं, इतने सर के बल खड़े होते हैं, ये करते हैं, वो करते हैं, धूप चढ़ाते हैं, सुबह से शाम तक रटते बैठते हैं, तो भी हमें परमात्मा क्यों नहीं मिलते ? परमात्मा से बात करने के लिये, आपका उनसे 'सम्बन्ध' होना चाहिये,connection होना चाहिये। जब तक आपका योग घटित नहीं होता, तब तक क्षेम नहीं होता। क्षेम का मतलब है, आपकी चारों तरफ से रक्षा; लक्ष्मी तत्त्व की जागृति। कृष्ण ने सिर्फ ये कहा है कि ' वहाम्यहम्'– " मैं करूँगा", पर कैसे करूँगा, सो नहीं कहा। सो मैं आपसे बताती हूँ, वह किस तरह से होता है।

जब योग घटित होता है, तब कुण्डलिनी त्रिकोणाकार अस्थि से उठकर के ब्रह्मरन्ध्र को छेदती है, जब कुण्डलिनी की शक्ति ब्रह्मरन्ध्र को छेदती है तब उसमें ज्योति आ जाती है, क्योंकि आत्मा की ज्योति वो पा लेती है। और उस ज्योति के कारण नाभि चक्र में जो ' लक्ष्मी तत्त्व' है वह जागृत हो जाता है। जैसे ही लक्ष्मी तत्त्व आपमें जागृत हो जाएगा, चारों तरफ से आप देखियेगा कि आपकी खुशहाली होने लगेगी।

कोई आदमी रईस हो जाए– जिसे हम 'पैसे–वाला' कहते हैं, जरूरी नहीं कि वह 'खुशहाल' है। अधिकतर पैसे वाले लोग महादुःखी होते हैं। जितना पैसा होगा, उतने ही वो गधे होते हैं, उतनी ही उनके घर के अन्दर गन्दगी आती है–शराब, दुनिया भर की चीज, मक्कारीपन,झूठापन–हर तरह की चीज उनके अन्दर रहती है। हर समय डर, भय–कभी सरकार आकर पकड़ती है, कि खाती है, कि हमारा पैसा जाता है, कि ये होता है,वो होता है। जो बहुत रईस लोग हैं, तो भी कोई लक्ष्मी पति नहीं क्योंकि उनके अन्दर लक्ष्मी का तत्त्व नहीं जागृत हुआ है। सिर्फ पैसा कमा लिया। पैसा उनके लिये मिट्टी जैसा है, उससे कोई उनको सुख नहीं है।

लक्ष्मी का तत्त्व समझना चाहिये।

मैने पिछली मर्तबा बताया था कि लक्ष्मी जी कैसी बनी हैं। उनके हाथ में दो कमल हैं–वो गुलाबी रंग के हैं और एक हाथ से दान करती हैं और एक हाथ से वो आश्रय देती हैं। गुलाबी रंग का द्योतक होता है– 'प्रेम'। जिस मनुष्य के हृदय में प्रेम नहीं है वो लक्ष्मीपति नहीं हो सकता। उस का घर ऐसा होना चाहिये जैसे कमल का फूल होता है। कमल के फूल के अन्दर भौंरे जैसा जानवर, जो कि बिल्कुल शुष्क होता है– उसके काँटे चुभते हैं अगर आप हाथ में लीजिये तो–उसको तक वो स्थान देता है। अपनी गोद में उसको सुलाता है, उसको शान्ति देता है।

लक्ष्मीपति का मतलब ये है कि जिसका दिल बहुत बड़ा है। जो अपने घर आए हुए अतिथियों को, किसी को भी अत्यन्त आनन्ददायी होता है– वो लक्ष्मीपति है। लेकिन अधिकतर आप रईस लोग देखते हैं कि महाभिखारी होते हैं। उनके घर आप जाइये तो उनकी एकदम जान निकल जाती है, कि ' मेरे दो पैसे खर्च हो जाएँगे'। जिस आदमी को हर समय से फिक्र लगी रहती है कि ' मेरे आज चार पैसे यहाँ खर्च हो रहे हैं, दो पैसे वहाँ खर्च हो रहे हैं, इसको जोड़ के रखो, उसको कहाँ बचाऊँ, उस को क्या काटूं ' –वो आदमी लक्ष्मीपति नहीं है।

कन्जूस आदमी लक्ष्मी पति नहीं हो सकता। जो कन्जूस है, वो कन्जूस है, तो लक्ष्मीपति नहीं है। कन्जूस आदमी दरिद्री होता है– महादरिद्री होता है। उसमें बादशाहत नहीं होती। जिस आदमी की तबियत में बादशाहत नहीं होती, उसे लक्ष्मीपति नहीं कहना चाहिये।

जो आदमी बादशाह होता है, वह चाहे गरीबी में रहे चाहे अमीरी में रहे, वह बादशाह होता है। वह बादशाह के जैसा रहता है। छोटी–छोटी चीज़ के पीछे, दो–दो कौड़ी के पीछे, इसके पीछे, उसके पीछे परेशान होने वाला लक्ष्मीपति नहीं हो सकता। इसीलिये लक्ष्मी–तत्त्व जागृत नहीं होता। इसीलिये नाभि–चक्र की बड़ी ज़ोर की पकड़ हो जाती है। उस आदमी के अन्दर Materialism (भौतिकवाद) आ जाता है। वह जड़वादी हो जाता है। छोटी–छोटी चीज़ का उसे बड़ा खयाल रहता है। ' ये मेरा, ये मेरा' –ये मेरा बेटा है, ये मेरा फलाना है, ये ढिकाना– ये सारी चीज़ जिस आदमी में आ गई तो लक्ष्मीपति नहीं। इसकी चीज़ मारूँ कि उसकी चीज़ मारूँ कि ये लूँ कि वो लूँ , कि सब 'मेरे' लिये होना चाहिये– इस तरह से जो आदमी सोचता है वो भी लक्ष्मीपति नहीं।

जो दूसरों के लिये सोचता है– ' अगर मेरा अच्छा आलीशान मकान है तो इसमें कितने लोग आकर बैठेंगे, अगर मेरे पास आलीशान चीजें हैं तो कितने लोगों को आराम होगा। कैसे मैं दूसरों का स्वागत कर पाऊंगा, कैसे मैं दूसरे लोगों की मदद कर पाऊँगा ? किस तरह मैं उनको अपने हृदय में स्थान दूँगा ? 'मदद' का भी सवाल नहीं उठता; आदमी यह सोचता है कि ' ये मेरे ही अपने हैं। इनके साथ जो भी करना है मैं अपने साथ ही कर रहा हूँ' –तब असल में लक्ष्मी तत्त्व जागृत हो जाता है।

कमल के जैसा उसका रहन–सहन, उसकी शक्ल होनी चाहिये। ऐसा आदमी 'सुरभित' होना चाहिये न कि उससे हर समय घमण्ड की बदबू आए। अत्यन्त 'नम्र' होना चाहिये। कमल का फूल आपने देखा है उसमें हमेशा थोड़ी –सी झुकान रहती है। कमल कभी भी तनकर खड़ा नहीं होता, उसमें थोड़ी –सी झुकान जरूर डण्ठल में आ जाती है। उसी प्रकार जो कम से कम लक्ष्मी जी के हाथ में जो कमल हैं दोनों में इसी तरह की ' सुकुमारिता' होती है।

दूसरों से बात करते समय वो बहुत ठण्डी तबियत से, आनन्द से, प्रेम भरा इस तरह से बात करता है–झूठा नहीं होता, वो Plastic के नहीं होते हैं, वो कमल, असल में होते हैं।

ऐसा मनुष्य असल में कमल के जैसा होना चाहिये। एक हाथ से वो दानी होना चाहिए, उसके हाथ से दान बहते ही रहना चाहिए ,बहते ही रहना चाहिए। हमने अपने पिता को ऐसा देखा है। पिता की बात हम देखते हैं, बहुत दानी आदमी थे। वो देते ही रहते थे। उनके पास कुछ ज़्यादा हो जाए तो बाँटते ही रहते थे।मज़ा ही नहीं आता जब तक तो

बाँटे नहीं। अगर उनसे कोई कहता कि " आप आँख उठाकर नहीं देखते जो आ रहा है वही उठा कर ले जा रहा है तो कहने लगते कि " मैं क्या देखूँ। जो देने वाला है दे रहा है, मैं तो सिर्फ़ बीच में खड़ा हूँ– दे रहा हूँ उसमें देखना क्या ? मुझे तो शर्म लगती है कि लोग कहते हैं कि ' तुम' दे रहे हो।" इस तरह का दानत्व वाला आदमी जो होता है, जो अपने लिये कुछ भी संग्रह नहीं करता है, दूसरों को देता रहता है जो दूसरों को बांटता रहता है, देने में ही उसको आनन्द आता है, लेने में नहीं–यह आदमी लक्ष्मीपति है। जो अपने ही बारे में सोचता रहे– ' मेरा कैसे भला होगा, मेरे बच्चों का कैसे भला होगा, मैं कैसे अच्छा होऊँगा–ऐसे आदमी को लक्ष्मीपति नहीं कहते। उसमें कोई शोभा नहीं होती, वह असल में भिखारी होता है। और लक्ष्मीपति एक हाथ से तो आश्रय देता है, अनेक को अपने घर में, जो भी आए, उससे अत्यन्त प्रेम से मिलना, उस से अत्यन्त प्रेम से, अपने बेटे जैसे उसकी सेवा करनी आश्रय देना। उसके यहाँ नौकर–चाकर, घर में जानवर–अनेक लोग उसके आश्रय में होते हैं पर वो जानते है कि हमारा आश्रय दाता है। कोई हमें तकलीफ़ होयेगी, वो हमें देगा। रात को उठ कर के भी देगा, चुपके से करता है। वो ये बताता नहीं, जताता नहीं, दुनिया को दिखाता नहीं कि मैंने उनके लिये इतना कर दिया, वो कर दिया–एकदम चुपके से करता है।

परमात्मा भी हू–बहू ऐसा है। वो स्त्री स्वरूप, माँ स्वरूप बनाया हुआ है– लक्ष्मीजी का स्वरूप। एक कमल पर लक्ष्मीजी खड़ी हो जाती हैं।आप सोचिये कि एक कमल पर खड़ा होना, माने आदमी में कितनी सादगी होनी चाहिये, बिल्कुल हल्का, उसमें कोई दोष नही। कमल पर भी वो खड़ा हो सके–ऐसा आदमी उसे होना चाहिये, जो किसी को अपने बोझ से न दबाए। जो बहुत ही नम्र होना चाहिये। जो दिखाते फिरते हैं हमारे पास ये चीज़ है, वो चीज़ है, फलाना है, ढिकाना है, वो लक्ष्मीपति नहीं हो सकता। ' मातृत्व' उनमें होना चाहिये। माँ का हृदय होना चाहिये, तब उसे लक्ष्मीपति कहना चाहिये।

ये सब लक्ष्मीपति के लक्षण हैं और जब आप के अन्दर ये तत्त्व जागृत हो जाता है, तो पहली चीज़ आती है– 'सन्तोष' । ऐसे तो किसी चीज़ का अन्त ही नहीं है, आप जानते हैं कि Economics (अर्थशास्त्र) में कहते हैं, कोई भी wants satiable होती नहीं है in general (सामान्यतया कोई भी चाहत की तृप्ति नहीं होती)। आज आपके पास से है तो कल वो चाहिये। वो है तो वो चाहिये, वो चाहिये तो वो चाहिये। आदमी पागल जैसा दौड़ता रहता है, उसकी कोई हद ही नहीं होती। आज यह मिला, तो वो चाहिये ,वो मिला तो वो चाहिये। लेकिन आदमी को सन्तोष आता है। उसे संतोष आ जाता है। जब तक आदमी को सन्तोष नहीं आएगा, वह किसी भी चीज़ का मजा नहीं ले सकता। क्योंकि 'संतोष' जो है वह वर्तमान की चीज़ है present की चीज़ है, और ' आशा' जो है Future (भविष्य) की चीज़ है; ' निराशा' जो है ये Past (भूतकाल) की चीज़ है।आप जब सन्तोष में खड़े रहते हैं तो filly satiafied . (पूर्णतया सन्तुष्ट), तब आप पूरा उसका आनन्द उठा रहे हैं, जो आपको मिला हुआ है। नहीं तो उनके पास कितना भी रहता है तो भी कहते हैं, 'अरे! उसके पास है–मुझे वो चाहिये'। तो काहे को मिला है ? फिर वो मिल गया तो उसको वो चाहिये। कभी भी ऐसा आदमी अपने जीवन का आनन्द नहीं उठा सकता, कभी भी वो ऊँचा नहीं उठ सकता। रात–दिन उसकी नज़र जो है ऐसी ही बढ़ती रहेगी, जो चीज़ें

बिल्कुल व्यर्थ हैं, जिनका कोई भी महत्त्व नहीं जिनका जीवन में कोई महत्त्व नहीं, जिनका अपने जीवन के आनन्द से कोई भी सम्बन्ध नहीं, ऐसी चीज़ के पीछे वो भागता है।

पर पहले योग घटित होना चाहिये– फिर क्षेम होता है। हमारे सहजयोग में– यहाँ पर भी अनेक लोग आये हुये हैं जो कि हमारे साथ सहजयोग में रहे और जिन्होंने पाया और इसमें प्रगति की है। इनकी सबकी Financial (आर्थिक) प्रगति हुई है।सबकी– A to Z । कोई–कोई लोगों के पास तो लाखों रुपया आया। जिनके पास एक रुपया नहीं था उनको लाखों रुपया मिला। ऐसे भी लोग हमारे यहाँ हैं जिन्होंने– अब देखिये, अभी भी जो आए हुए हैं अंग्रेज लोग, वो India (भारत) आना चाहते थे, तो इन्होंने कहा कि कैसे जाएँ ? पैसा तो है इन के पास । इनकी भी बड़ी प्रगति हो गई। वैसे भी इनको बहुत पैसा –वैसा मिल गया और काफी आराम से रहने लगे। वो जब आने लगे तो इन्हें एक Firm (संस्था) ने कह दिया, अच्छा ,तुम मुफत में जाओ, हम तुम्हारा पैसा दे देंगे, क्योंकि तुम हमारा यह काम कर देना।'

छोटी–छोटी चीज़ में परमात्मा मदद करता है। और इतना रुपया आपके पास बच जाता है कि आपको समझ नहीं आता कि क्या करूँ। ये लोग पहले लेते थे, शराब लेते थे और दुनिया भर की चीजे करते थे। उसमें बहुत रुपया निकल जाता था। अब मैंने देखा है कि इनके घर अच्छे हो गए हैं, घरों में सब चीजें आ गई, अच्छे से सब Music (सगीत) सुनते हैं, सब अच्छे–अच्छे शौक इनके अन्दर आ गए। सब बढ़िया तरीके से रहने लग गए। इनके बाल–बच्चे अच्छे हो गए। मैंने पूछा, 'यह कैसे हुआ ?' कहने लगे कि हम सारा पैसा बर्बाद करते थे,हमें होश ही नहीं था कि हम कैसे रहते थे, कहाँ रहते थे।

इसलिये, जो गुरुजन हो गए हैं, उन्होंने शराब और ऐसी चीजो को एकदम मना किया है। अब, शराब तो इतनी हानिकर चीज़ है कि इस तरफ़ से अगर बोतल आई शराब की, उस तरफ़ से लक्ष्मी जी चली गई–' सीधा' हिसाब। उन्होंने देखा कि आपकी शराब की बोतल अन्दर आ गई, उधर से वो चली गई। ऐसे आदमी को कभी भी लक्ष्मी का सुख नहीं मिल सकता। जिनके घर में शराब चलती है, उनके घर में लक्ष्मीजी का सुख नहीं हो सकता। हाँ, उनके यहाँ पैसा होगा, लड़के रुपया उड़ाएँगे, बीवी भाग जाएगी– कुछ न कुछ गड़बड़ हो जाएगा।' बच्चे भाग जाएँगे–कुछ न कुछ तमाशे होंगे। आज तक एक भी घर आप मुझे बतायें, जहाँ शराब चलती है और लोग खुशहाल हों। खुशहाल हो ही नहीं सकते। खुशहाली शराब के बिल्कुल विरोध में रहती है।

इसीलिये गुरुजनों ने जो मना किया–खास कर 'हरएक'ने; क्यों किया ? हमको सोचना चाहिये। आखिर वो लोग कोई पागल नहीं थे। उन्होंने हज़ार बार इस चीज़ को मना किया कि 'शराब पीना बुरी बात है। शराब मत पियो, शराब मत पियो।' शराब तो एक ऐसी चीज है कि ये भगवान ने पीने के लिये तो कभी भी नहीं बनाई थी.पॉलिश करने के लिये बनाई थी– पॉलिश करने के लिये। कल लोग 'फिनायल' पीने लगेंगे! क्या कहें आदमी के दिमाग को! कुछ भी पीने लग जाएं तो कौन क्या कर सकता है ? आदमी का दिमाग इतना चौपट है कि कोई भी चीज़ उसकी समझ में आ जाए, पीने लग जाएगा। उसे किसने कहा था शराब पीने के लिये ?

अब ये पॉलिश की चीज़ आप शराब के नाम से जब पीते हैं तो आपके भी जितने भी Liver

(जिगर,Intestines (अन्तड़ियाँ) हैं, सब पॉलिश हो जाते हैं। यहाँ तक कि Arteries (धमनियाँ) आपकी पॉलिश होकर के Stiff (सख्त) हो जाती हैं।Arteries इतनी Stiff हो जाती हैं कि उसकी जो स्नायु हैं वो अपने को स्थितिस्थापक नहीं बना सकते। माने, न तो वो बढ़ सकते हैं, न घट सकते हैं–बस जमते ही जाते है। Arteries जो हैं एकदम एक size की हो जाती हैं ,तो खून भी नहीं चल पाता, खून भी अटक जाता है। जब कोई भी दबाव न हो, उसके ऊपर में कोई फुलाव न हो और एकदम नली जैसे बन जाए Arteries तो उसमें क्या होगा ? ऐसा पॉलिश का पुट चढ़ता जाता है जिसकी कोई हद नहीं, और मनुष्य भी पॉलिश बन जाता है। ऐसा आदमी ' बड़ा ' कृत्रिम होता है। ऊपर से बड़ी अच्छाई दिखाएगा। शराबी आदमी है; ऊपर से–वाह! बड़ा शरीफ़ है,बड़ा दानी है, ऐसा है, वैसा है। सब ऊपरी चीज़ें। जो अपने बीवी बच्चों को भूखा मार सकता है, जो अपने बीवी बच्चों से ज़्यादती कर सकता है, वो आदमी कितना भी भला बाहर करके घूमे उसका क्या अर्थ निकलता है,बताइये ? इसलिये शराब की इतनी मनाही की गई है, इतनी मनाही कर गए हैं, सो किस लिये कर गये हैं ?

अब मुसलमानों को इतनी मनाही है शराब की लेकिन उनसे ज़्यादा कोई पीता ही नहीं। क्यों मनाही कर गए ? सोचना चाहिये। मोहम्मद साहब जैसे आदमी क्यों मनाही कर गए ? नानक साहब इतनी मनाही कर गए– सिक्खों से ज़्यादा तो लंदन में कोई पीता ही नहीं। उनके आगे तो अंग्रेज हार गए। है कि नहीं बात ? कौन–से धर्म में शराब को अच्छा कहा है ? कोई भी धर्म में नहीं कहा। लेकिन सब धर्म में लोग इतना ज़्यादा पीते हैं और गुरुओं का अपमान करते हैं।

हमारी सारी नाभि चक्र और उसके चारों तरफ़ दस जो हमारे धर्म हैं, जो कि गुरुओं ने बनाए हैं, ये दस धर्म हमारी नाभि में होते हैं। इसीलिए इन गुरुओं ने मना किया हुआ है कि आप अपने धर्मों को बनाने के लिये, पहली चीज़ है–शराब या कोई सी भी ऐसी आदत न लगाएँ जिससे आप उसके गुलाम हो जाएँ। अगर आपको ये गुलामी करनी है, तो आप स्वतन्त्रता की बात क्यों करते हैं। लोग तो सोचते हैं कि गुलामी करना ही स्वतन्त्रता है। आपको अगर कोई मना करे कि बेटे शराब नहीं पियो तो लोग सोचते हैं कि ' देखो, ये मुझे रोकते हैं टोकते हैं, मेरी " स्व–तन्त्र–ता" छीनते हैं। मनुष्य इतना पागल है। उसको मना इसलिये किया जाता है कि ' बेटे, तुम उसकी गुलामी मत करो'।

जब कभी कोई बात बड़े लोग बताते हैं तो उसको विचारना चाहिए–न कि उसको रटते बैठना चाहिए, सुबह से शाम तक। उसको विचारना चाहिए, उसको सोचना चाहिए कि उन्होंने ऐसी बात 'क्यों' कही; कोई न कोई इसकी वजह हो सकती है। ऐसे इतने बड़े ऊँचे लोगों को ऐसी बात कहने की जरूरत क्या पड़ी थी ? क्यों इस चीज को बार–बार उन्होंने मना किया है ? ये सोचना चाहिए और विचारना चाहिए और कोई भी मनुष्य ज़रा सा भी बैठकर सोचे तो वह समझ सकता है कि इस कदर गन्दी ये चीज़ें हम लोगों ने अपना ली हैं, 'जिस के कारण हमारे यहाँ से लक्ष्मी–तत्व चला गया है। इंग्लैंड से तो लक्ष्मी–तत्व बिल्कुल पूरी तरह से चला गया है। यहाँ पर लक्ष्मी–तत्व है ही नहीं; और जागृत करना भी बहुत कठिन है।

क्योंकि लक्ष्मी–तत्व जो है, वो ही परमात्मा के कोच का पाया है। नाभि में ही विष्णुजी का जो स्थान है, और विष्णु या जिसे हम लक्ष्मी, उनको जो शक्ति मानते हैं – इसी में हमारी खोज शुरू होती है। जब हम Amoeba (अमीबा) में रहते, तो हम

खाना खोजते थे। ज़रा उससे बड़े जानवर हो गए तो और कुछ खाना पीना और संग–साथी ढूँढते हैं। उसके बाद हम इन्सान बन गए तो हम सत्ता खोजते हैं। हम इसमें पैसा खोजते हैं। बहुत से लोग तो खाने–पीने में ही मरे जाते हैं।

बहुत–से लोग तो सुबह से शाम तक क्या खाना है, क्या नहीं खाना है, ये करना है, वो करना है। इसी में सारे बर्बाद रहते हैं। जिन लोगों को अति खाने की बीमारी होती है, वो भी लक्ष्मी–पति कैसे ? वो तो भिखारी होते हैं, इनका तो दिल ही नहीं भरता। एक मुझे कहने लग गई – एक हमारे यहाँ बहू आई थीं रिश्ते में, कहने लगीं कि 'मेरे बाप के यहाँ ये था, वो था'। 'अरे !' मैंने कहा, 'तुम में तो दिखाई देना चाहिए। तुम्हारे अन्दर तो ज़रा भी सन्तोष नहीं। तुम्हें कि ये खाना चाहिए, तुमको वो खाने को चाहिए; घूमने को चाहिए। कोई सन्तोष तुम्हारे बाप ने दिया कि नहीं दिया तुमको ? अगर वाकई तुम्हारे बाप इतने लक्ष्मीपति थे तो कुछ तो तुम्हारे अन्दर सन्तोष होता !' "मिला तो मिला, नहीं तो नहीं मिला।"

जब ये स्थिति मनुष्य में आ जाती है – जब उसकी सत्ता खत्म हो गई, जब उसको समझ में आया कि सत्ता में नहीं रहा, पैसे में नहीं रहा, किसी चीज़ में उसे वह आनन्द नहीं मिला, जिसे खोज रहा था, तब आनन्द की खोज शुरू हो जाती है। वो भी नाभि चक्र से ही होती है। इसी खोज के कारण आज हम Amoeba (अमीबा)से इन्सान बने। और इसी खोज के कारण, जिससे हम परमात्मा को खोजते हैं, हम इन्सान से अतिमानव होते हैं। 'आपा' को पहचानते हैं। आत्मा को पहचानते हैं – इसी खोज से। इसीलिए लक्ष्मी–तत्व बहुत ज़रूरी चीज़ है।

और लक्ष्मी–तत्व जो बैठा हुआ है, उसके चारों तरफ़ 'धर्म' है। मनुष्य के दस धर्म बने हुए हैं। अब आप Modern (आधुनिक) हो गए तो आप सब धर्म उठाकर चूल्हे में डाल दीजिए। भई आप Modern हो गए। क्या कहने आपके ! लेकिन ये तो आपके अन्दर दसों धर्म हैं ही। ये 'स्थित' हैं, ये वहाँ हैं। अगर मनुष्य के दस धर्म नहीं रहे, तो वो राक्षस हो जाएगा। जैसे ये सोने का धर्म होता है कि ये खराब नहीं होता, इसी तरह से आपके अन्दर जो दस धर्म हैं, वो आपको बनाए रखने हैं – जो मानव धर्म हैं। अगर इन धर्मों की आप अवहेलना करें – और उसके उपधर्म भी हैं लेकिन में दस धर्म आपने सम्भालने हैं, गर वो आप दस धर्म न संभालें – तो आपका कभी भी उद्धार नहीं हो सकता, कभी भी आप पार नहीं हो सकते। पहले, जब तक आप धर्म को नहीं बनाते हैं, तब तक आप 'धर्मातीत' नहीं हो सकते – धर्म से ऊपर नहीं उठ सकते। पहले इन धर्मों को बनाना पड़ता है और इसीलिए इन गुरुओं ने बहुत मेहनत की, बहुत मेहनत करी है। इनकी मेहनत को हम लोग बिल्कुल मटियामेट कर रहे हैं, अपनी अक्ल की वजह से। सब इनको खत्म कर रहे हैं। "इन धर्मों को बनाना हमारा पहला परम कर्त्तव्य है।"

लेकिन आजकल के जो गुरु निकले हुए हैं, उनको आपसे या धर्म से कोई मतलब नहीं है – 'आप शराब पीते हैं ? लेओ और हमको भी एक बोतल लाओ रात को कोई हर्जा नहीं। अच्छा, आप औरतें रख रहे हैं ? तो ठीक है, दस औरतें रखिए और एक हमारे पास भी भिजवा दीजिए, या अपने बीवी–बच्चे हमारे पास भेज दीजिए। आपकी जेब में जितना रुपया है, हमारे पास दे दीजिए – हमें आप से कोई मतलब नहीं। आपको जो भी धन्धा करना है करें। आपके बस पर्स में जितना पैसा है इधर जमा कर दीजिए, फिर आप चाहे जैसा करें ! आज

ही एक किस्सा है, बता रही थीं हमारे साथ आई हुई हैं कि इनकी बहन, राजकन्या है वो भी, और उनके पति बहुत शराबी, कबाबी, बहुत बुरे आदमी थे। और वो एक गुरु के शिष्य थे। इन्होंने जाकर उनसे बताया कि ये आदमी मारता है, पीटता है, सताता है, औरत रख ली है। उससे कुछ कहो। वो औरतें रखता है। और राजकुमार है, लेकिन क्या करें उसका इतना खराब हो रहा है। तो कहने लगे कि रहने दो, तुमको क्या करना है ? उनसे रुपए ऐंठते गए, रुपया ऐंठते गए। 'गुरुजी' को मतलब उनके रुपए से !

ये कोई गुरु हुए जो आपसे रुपए ऐंठते हैं? आपके गुरु हो ही कैसे सकते हैं ? जो आपके पैसे के बूते पर रहते हैं। ये तो Parasites हैं। आपके नौकरों से भी गए गुज़रे हैं। कम से कम आपके नौकर आप का कुछ काम करते हैं। जो लोग आपसे रुपया ले करके जीते हैं, ऐसे दुष्टों को तो बिल्कुल राक्षसों की योनी में डालना चाहिए और ऐसे दुष्टों के पास जाने वाले लोग भी महामूर्ख हैं, मैं कहती हूँ। वो देखते क्यों नहीं ? क्या आप परमात्मा को खरीद सकते हैं ? क्या आप किसी गुरु को खरीद सकते हैं ? अगर कोई गुरु हो तो क्या वो अपने को बेचेगा ?

उसकी अपनी एक शान होती है। उसको आप खरीद नहीं सकते। कोई भी चाहे। एक ही चीज़ से आप उसको मात कर सकते हैं। आपके 'प्यार' से, आपकी 'श्रद्धा' से, आपके 'प्रेम' से 'भक्ति' से। और किसी चीज़ से वो वश में आने वाली चीज़ नहीं है। उसकी अपनी एक 'शान' होती है। तो अपनी एक 'प्रतिष्ठा' में रहता है। उसकी एक 'बादशाहत' होती है। उसको क्या परवाह होगी ? आप हैं रईस तो बैठें अपने घर में। उसको क्या ? वो पत्तल में भी खा सकता है, वो चाहे जमीन पर भी सो सकता है, वो चाहे राजमहल में भी रह सकता है। वो जैसा रहना चाहे, रहे। उसे आपसे कोई मतलब नहीं। उसको तो सिर्फ़ आपके 'प्यार' से, आपकी 'श्रद्धा' से और आपकी 'खोज' से। अगर आपको खोज है तो सर आँखों पर आपको उठा लेगा। 'ऐसे गुरु को खोजना चाहिए, जो आपको परमात्मा की बात बताए, जो आपकी आत्मा की पहचान कराए।' 'जो मालिक से मिलाए' वही गुरु माना हुआ है।

जिसे दिखे, उसकी को गुरु ! ये तो अगुरु भी नहीं है – राक्षस हैं, 'राक्षस' ! अंगूठियाँ निकालकर आप को देते हैं। जो आदमी आपको अंगूठी निकाल कर देता है, वो क्या परमात्मा की बात करता होगा? आपका चित्त अंगूठी में डालता है, आपको दिखाई नहीं देता ? एक है – वो अधनंगा नाचना सिखा रहे हैं – अधर्म सिखा रहे हैं। कौन–से धर्म में लिखा है इस तरह की चीज़ ? दूसरे आजकल के गुरुओं के बारे में यह भी जानना चाहिए कि अपने ही ढँग से कोई चीज़ निकाल ली है। इनका पहले के गुरुओं के साथ कोई नहीं मेल बैठता। 'वो' जैसे रहते थे, जैसी उनकी सिखावन थी, जैसा उनका बर्ताव था, जो उनकी बातें थीं, उनके इनका कोई मेल नहीं बैठता।

अपने धर्म के जो अनेक इतिहास चले आ रहे हैं, जिसको कि आप कह सकते हैं कि किसी भी धर्म में लिखित, वही चीज़, वही चीज़ कही जाती है। अपने शंकराचार्य को पढ़ें तो आप सहजयोग समझ लेंगे; आप कबीर को पढ़ें, आप सहजयोग समझ लेंगे; नानक को पढ़ें, आप समझ लेंगे; मोहम्मद को पढ़ें आप समझ लेंगे; Christ को पढ़ें तो समझ लेंगे; कन्फ्यूशियस और सुकरात से लेकर सबको देखें तो सहजयोग ही सिखाते हैं। और ये जो सब आपको सर के बल उड़ना और फ़लाना और

ढिकाना और दुनिया भर की चीज़ आपको नचा–नचाकर मारते हैं – इनको कैसे आप गुरु मान लेते हैं ? "एक ही गुरु की पहचान है – जो मालिक को मिलाए, वही गुरु है और बाकी गुरु नहीं।"

सत्य पर अगर आप खड़े हुए हैं, तो आपको इसी चीज़ को देखना। लेकिन इन्सान इतना Superficial (उथला) हो गया है कि वो 'सर्कस' को देखता है। कितने ताम–झाम लेकर के आदमी घूम रहा है। कितनी हँडियाँ सर पर रखकर चल रहा है। बाल कैसे बनाकर चल रहा है। क्या सींग लगा कर चल रहा है। "गुरु की सिर्फ एक ही पहचान है, कि वो सिवाय मालिक के और कोई बात नहीं जानता। उसी में रमा रहता है। वही गुरु, माने आपसे ऊँचा इन्सान है।"

लेकिन जिनको आप खरीदते हैं, बाज़ार में, जिनको आप पैसा देते हैं, जो आपको बेवकूफ बनाते हैं, जो आपको Hypnotise (सम्मोहित) करते हैं, उनके साथ आप बंधे हुए हैं, तो इस तरह के लोगों को क्या कहा जाए ? और इस कलियुग में, इस घोर कलियुग में, तो ऐसे अनेक, अजीब तरह के एक–एक नमूने हैं मैं आपको बताऊँ किसका वर्णन करूँ, किसका कहूँ। ऐसे कभी न गुरु हुए, न होंगें, मेरे ख़याल से जिस तरह से हो रहे हैं आजकल।

पर वो ऐसी चिपकन होती है उस चीज की कि अभी एक देहरादून से एक देवी जी आई थीं। उनकी कुण्डलिनी एकदम ऐसे जमी हुई थी। तो मैंने कहा कि 'तुम कौन गुरु के पास गई ?' उन्होंने बड़े इससे बताया कि उनके पास गई ! मैंने कहा कि 'आपने उसके बारे में पेपर में पढ़ा कि नहीं पढ़ा ? एक अठारह साल की लड़की के साथ उन्होंने जो कुछ भी गड़बड़ किया था, उस लड़की ने और पच्चीस और लड़कियों ने Blitz (ब्लिट्ज़–एक पत्रिका) में और इसमें और उसमें सब कुछ छापा था – दस साल पहले छापा था।' कहने लगीं, 'हम ने पढ़ा, पर वह सब झूठ है। 'हमने कहा', झूठ है ! तो, आपको क्या मिला उनसे ?' तो उनको बड़ा बुरा लग गया। कहने लगीं, 'मैं तो शादीशुदा औरत हूँ, मैं ऐसी, मैं वैसी हूँ।' फिर मैंने कहा 'ऐसे आदमी के दरवाज़े जाना ही क्यों ?' लेकिन यह नहीं कि वो औरत बदमाश है, ये नहीं कि वो खराब औरत है। पर उस पर Hypnosis (सम्मोहन) है, Hypnotised (सम्मोहित)। कोई उनको Freedom (स्वतन्त्रता) नहीं। गुरु बैठेंगे सात मंजिल पर जाकर ! आप जाइए, वहाँ पर 'सेवा' करिए ! इतनी बड़ी–बड़ी पेटियाँ रखी रहेंगी उसमें आप पैसा डालिए। सेवा का मतलब है – पैसा डालिए ! और लोग घर से पैसे भर–भरकर ले जाते हैं, वहाँ डालने के लिए। यह आप देख लीजिए, कहीं भी जाकर के इतनी बड़ी–बड़ी ट्रंकें रखी रहेंगी। अरे! हमारे भी पैर छूते हैं तो कोई एक रुपया दे जाता है, कभी पाँच रुपया रख जाता है ! मुझे आती है हँसी ! मतलब आदत पड़ गई है न। हनुमान जी के मन्दिर जाओ, वहां भी सवा रुपया चढ़ाओ। और इसी चक्कर की वजह से हर जगह गड़बड़, हर जगह गड़बड़ हो गई है। ऐसी कोई जगह नहीं छोड़ी जो पवित्र जगह रह गई हो।

और इसी चक्कर की वजह से हमारे जो जवान बेटे हैं, जो जवान लोग हैं, सोचते हैं कि परमात्मा है कि तमाशा है ये सब ? क्योंकि वो तो अपनी बुद्धि रखते हैं न, अभी साबुत हैं दिमाग उनके। उनको अविश्वास हो रहा है। सारे धर्मों में ये हो गया है, आपको आश्चर्य होगा।

Algeria (अल्जीरिया) से हमारे पास आए थे एक साहब–जवान हैं, बहुत होशियार और

इंजीनियर थे। वो भी इसी आन्दोलन में कि ये किस कदर से मुसलमान और ये Fanaticism (धर्मान्धता) इन में है और इस तरह से ये लोग दुष्टता करते हैं और ये मुल्ला लोग हैं, सब पैसा खाते हैं और सब (जनता) के पैसे पर जीते हैं और अपने को बड़ा महान् समझते हैं और सब लोग उनके सामने झुकते हैं। फिर उन्होंने Pope (पोप) को भी देखा। वो भी एक नमूना है। तो बिल्कुल अविश्वास से भरकर आए। उन्होंने कहा कि ये सब धोखा है। इसमें कोई अर्थ नहीं –सब झूठ है। वो हमारे पास आए तो हमने कहा कि "जब सत्य है तभी उसका झूठ निकलता है।" जब सत्य होता है तो उसी के आधार पर लोग झूठ बनाते हैं न। सत्य भी कोई चीज़ है। Absolute भी कोई चीज़ है। 'अच्छा' हमने कहा, 'तुम देखना सहजयोग में'।

"सहजयोग जो है, ये धर्मान्धता और अविश्वास के बीचोंबीच है, जहाँ परमात्मा साक्षात् आपसे मिलते हैं। आप स्वयं इसका साक्षात करें, इस का अनुभव करें, इसमें जमें। जब तक आप सहज योग में जमते नहीं, तब तक आप पूरी तरह से इसका अनुभव नहीं कर सकते। जो जम गए, उन्होंने पा लिया, मिल जाता है। 'जिन खोजा तिन पाइया।' पर खोजा ही नहीं तो कोई आपके पैर पर तो सत्य बैठने नहीं वाला कि 'भई मुझे खोज'। उसकी अपनी प्रतिष्ठा है। उसको खोजना चाहिए, लेकिन उसको खोजने से सत्य से आनन्द उत्पन्न होता है। सत्य और आनन्द दोनों एक ही चीज़ हैं, एक ही चीज़ हैं दोनों। जैसे चंद्र की चन्द्रिका होती है या जिस तरह से सूर्य का उसका अपना प्रकाश होता है, उसी प्रकार सत्य और आनन्द दोनों चीज़ें एक साथ हैं। जब आप सत्य को पा लेते हैं, तो आनन्द–विभोर हो जाते हैं, आनन्द में रममाण हो जाते हैं। लेकिन ये सिर्फ लैक्चरबाज़ी नहीं है कि आपको मैं लैक्चर देती रहूँ सुबह से शाम तक। लैक्चर से तो मेरा गला थक गया। अब पाने की बात है कि कुछ पाओ, 'आत्मा' को पाओ। बहुत–से लोग ऐसे भी मैंने देखे हैं 'हमें तो कुछ हुआ नहीं माताजी' माने बड़े अच्छे हो गए! 'होना चाहिए'। अगर नहीं हुआ तो कुछ गड़बड़ है आपके अन्दर। कोई न कोई तकलीफ़ है, आप बीमार हैं, आप mentally (मानसिक रूप से) ठीक नहीं हैं, आप ने कोई ग़लत गुरु के सामने अपना मत्था टेका है। अगर आपने अपना मत्था ही, जो कि परमात्मा ने इतनी शान से बनाया है, इसको किसी ग़लत आदमी के सामने टेक दिया है तो खत्म हो गया मामला। आपको हमें भी अन्धता से नहीं विश्वास करना चाहिए। ग़लत बात है।

हम चाहते हैं कि आप पाओ और उसके बाद भी अगर आपने अविश्वास किया तो आपसे बड़ा मूर्ख कोई नहीं। और उसके बाद भी अगर आप जमे नहीं, तो आपके लिये क्या कहा जाए ?

जब आप पा लेते हैं तो इसमें जमिये। और जमने के बाद आप देखिये कि आपकी पूरी शक्तियाँ जो भी हैं, उस तरह से हाथ से बहती हैं और आप फिर दूसरों को भी इस आनन्द को दे सकते हैं। दूसरों को भी ये सुख दे सकते हैं। और ये किस तरह से घटित होता है ? कैसे बन पड़ता है ? ये आप धीरे–धीरे ,जैसे –जैसे इसमें गजरते जाते हैं आप खुद इसको समझते हैं।

अब इनमें से बहुत–से लोग हैं, छः महीने पहले हमारे पास आए। 'सिर्फ छः महीने पहले' हमारे पास में आए। अब ये, डॉ. बरजोर्जी साहब हैं। ये हमारे पास छः महीने पहले आए और ये बहुत बड़े डॉक्टर हैं लन्दन के, इसके अलावा जर्मनी में भी

Practice (व्यवसाय) करते हैं। जब से इन्होंने पाया है इसके पीछे पड़े हैं। तब से कैंसर ठीक किये हैं, दुनिया भर की बीमारियाँ ठीक की हैं और अब कहते हैं कि इसको पाने के बाद सब कुछ irrelevent (असंगत) लगता है। क्योंकि 'जब आप बिल्कुल सूत्र पर ही काम करने लग गए, जब आपने सूत्र को ही पकड़ लिया, तो फिर बाकी चीज़ें हिलाना कुछ मुश्किल नहीं।

इस प्रकार ' आप सब' इसके अधिकारी हैं, इसीलिये इसे सह–ज (सहज) कहते हैं।'सह' माने आपके साथ, 'ज' माने पैदा हुआ। आप भी इसके अधिकारी हैं– हर एक आदमी इसका अधिकारी है और इसको पा लेना चाहिये। जैसे एक दीप दूसरे दीप को जला सकता है, उसी प्रकार एक Realized Soul(साक्षात्कार प्राप्त) दसरे को Realization (साक्षात्कार) दे सकता है। लेकिन Realized Soul होना चाहिए। अगर एक दीप जला हुआ ही न हो, तो दूसरे दीप को क्या करेगा? जब दूसरा दीप जल जाता है तो वो तीसरे को जला सकता है। इसी प्रकार ये घटना घटित होती है, और आदमी के अन्दर लाइट (प्रकाश) आ जाती है।

अब लाइट आने का मतलब यह नहीं कि आप Light देखते हैं। यह भी एक दूसरी एक अजीब–सी चीज़ है कि लोग लाइट देखना चाहते हैं। 'देखना जब होता है, तब वहाँ आप नहीं होते।

जैसे कि समझ लीजिये कि आप अब बाहर हैं, तो आप इस Building (भवन) को देख सकते हैं, लेकिन जब आप अन्दर आ गए, तो क्या देखियेगा? कुछ भी नहीं! तब तो सिर्फ आप होते मात्र हैं, आप देखते नहीं हैं कुछ। जहाँ–जहाँ देखना होता है तो सोंचना कि आप अभी बाहर हैं। लाइट जो लोगों को दिखाई देती है, वो Short circuit(फ़यूज उड़ना) हो जाता है न, वैसी लाइट है, जिसे स्पार्क (चिंगारी) बोलते हैं। इसलिये जिस जिस को लाइट दीख रही हो, वो मुझे बताएँ–आज्ञाचक्र टूटा है उस आदमी का। उसको ठीक करना पड़ेगा।

ये सारे चक्र भी कुण्डलिनी अपने से ठीक करती चलती है। ''वो आपकी माँ है'', आप हरएक की अलग–अलग माँ हैं, वो आप जिसको सुरति कहते हैं, वही यह सुरति है। और यह अपने आप से चढ़ती है और अपने आप आपको ठीक करके वहाँ पहुचाँ देती है। आप में अगर कोई दोष है, वो भी हम समझ सकते हैं। वो भी वो बता देती हैं कि क्या दोष ठीक हो सकता है, कोई गलती हो गई वो भी ठीक हो सकती है। लेकिन अपने को Receptive mood (प्राप्ति इच्छुक स्थिति) में रहना चाहिये– कि 'हम इसे ले लें, प्राप्त कर लें और 'हो' जाएँ।

अब कल भी एक बात जो उठी थी, वह आज भी दिमाग में किसी के उठ रही है कि कुण्डलिनी Awakening (जागृति) तो, लोग कहतें हैं, कि बड़ी मुश्किल चीज़ है, बड़ी कठिन चीज़ है, यह कैसे होती है। इसमें कोई नाचते हैं, कोई बन्दर जैसे नाचते हैं, कोई कुछ करते हैं। कुछ भी नहीं होता! हमने हजारों की कुण्डलिनी जागृत की हैं और पार किया हुआ है। ऐसा कभी भी नहीं होता है।

जो परमात्मा ने आपके उद्धार के लिये चीज़ रखी हुई है, आपके पुनर्जन्म के लिये आपकी माँ है, वह आपको कोई भी दुःख नहीं देती। उल्टे आपको वो 'अत्यन्त सुखदायी' है। कैंसर जैसी बीमारी कुण्डलिनी के Awakening (जागृति) से ठीक होती है। सारी बीमारी आपकी ठीक हो सकती हैं। इसी तरह की बड़ी भारी 'देवदायिनी, आशीर्वाददायिनी', इस तरह की बड़ी भारी शक्ति आपके अन्दर में हैं। इस तरह की गलत धारणाएँ कर लेना, कि हम बन्दर

हो जाएँगे, मेंढक हो जाएँगे–आपको अतिमानव जो बनाने वाली चीज़ है, तो आपको क्या मेंढक बनाएगी? इस चीज़ को आप समझ लें।

अब 'यह कठिन होता है' ! तो , उसके लिये कठिन है जो बेवकूफ़ है, जिसको मालूम नहीं, जो इसका अधिकारी नहीं, उसके लिये कठिन है। "जो इसका अधिकारी है, जो इसके सारे ही काम–काज जानती है, उसके लिये यह बाएँ हाथ का खेल है। हो सकता है कि हम इसके अधिकारी हैं और हम इसके सारे काम काज जानते हैं, इसीलिये आसानी से हो जाता है। "बहरहाल आप अपनी आँख से भी देख सकते हैं, इसका चढ़ना भी देख सकते हैं। और इस की हम लोगों ने फ़िल्म–विल्म भी बनाई है। पर जो लोग बहुत शंकापूर्ण होते हैं, उनके लिये सहजयोग ज़रा मुश्किल से पनपता है। इस चीज़ को पाना चाहिये और इसको लेना चाहिये।

आजकल जो ज़माना आ गया है, जिस ज़माने में हम रह रहे हैं– कलियुग में, असल में हम ये कहेंगे कि आध्यात्मिक दृष्टि से हम लोग बहुत ही ज़्यादा, बहुत ही ज़्यादा कमज़ोर है। Insensitive अर्थात् संवेदना हमारे अन्दर नहीं है। हम आध्यात्म की चीज़ को अगर समझते होते और अगर समझते कि 'आत्मा की पहचान क्या है', तो हम कभी भी गलत गुरुओं के पीछे नहीं भागते। लेकिन हमारे अन्दर सच को पहचानने की शक्ति, बहुत कम हो गई है, क्षीण हो गई है। हम यह नहीं पहचान सकते, कि सच्चाई क्या है! उसकी वजह यह है कि इतने कृत्रिम हो गए हैं, इतने artificial (कृत्रिम) हो गए– आप artificial हो जाइएगा तो आपकी सत्य को पहचानने की शक्ति कम हो जाएगी।

पर जैसे गाँव में, अभी भी मैं देखती हूँ कि गाँव में लोग एकदम पहचान लेते हैं। वो पहचान लेते हैं कि कौन असल है और कौन नक़ल है। गाँव के लोगों में नब्ज़ होती है इस चीज़ को पहचानने की। वो समझते हैं, कि ये आदमी नक़ली है और ये आदमी असली है।

पर शहर के लोग तो आप जानते हैं, कृत्रिम हो जाते हैं। Artificially रहते हैं, इसलिये सत्य की पहचान नहीं होती और इसलिये भी जितने चोर ढंग के लोग हैं, ये सब आपके शहर के पीछे लगे हैं। ये सारे शहरों में आते हैं, गाँव में कोई नहीं काम करता। क्योंकि आपके जेब में पैसे होते हैं, आपकी जेब से उनको मतलब हैं। वो क्यों गावँ में जाएँगे? सहजयोग हमारा गाँव में चलता है। असल में शहर में तो हम यों ही आते हैं लेकिन हमारा काम तो गाँव में ही होता है। गाँव के लोग सीधे–सादे, सरल, परमात्मा से सम्बन्धित लोग होते हैं, वो इसको बहुत आसानी से पा लेते हैं। उनको एक क्षण भी नहीं लगता।

लेकिन शहर के लोगों में एक तो शहर की आबोहवा की वजह से और यहाँ के तौर–तरीकों की वजह से आदमी इतना अपने को बदल देता है, इस क़दर अपने को धर्म से गिरा देता है– "अब ये इसमें क्या हुआ साहब, सब लोग पीते है Business के लिये पीना चाहिये। "मानो जैसे Business ही भगवान है। "उसको तो पीना ही चाहिये, फिर उसके अलावा Business कैसे चलेगा।"

या तो फिर ये कहो कि तुम परमात्मा में या धर्म में बिल्कुल विश्वास नहीं करते और अगर ज़रा भी विश्वास करते हो, तो जो अधर्म है, इसको नहीं करना चाहिये। कोई ज़रूरत नहीं किसी को पीने की। ये भी एक ग़लतफ़हमी है कि Business के लिए करना पड़ता है, इसके लिये। जो आदमी अपने को धोखा देना चाहता है उसे तो कोई नहीं बचा सकता।

हमारे पति भी आप जानते हैं सरकारी नौकरी में रहे हैं उन्होंने बहुत बड़ी (जहाजी) कम्पनी चलाई, उसके बाद आज भी बहुत बड़ी जगह पर पहुँचे हुए हैं। मैंने उनसे एक बात कही कि शराब मेरे बस की नहीं और ज़िन्दगी भर उन्होंने छुई नहीं, एक बूँद भी और भगवान की कृपा से बहुत successful (सफल) हैं। सब उनको मानते हैं, सब उनकी इज़्जत करते हैं। आज तक किसी शराबी आदमी का कहीं पुतला बना है कि ये महान् शराबी थे। मुझे एक भी बताएँ, एक भी देश। इंगलैण्ड में लोग इतनी शराब पीते हैं, मैंने किसी को देखा नहीं कि' ये बड़ा शराबी खड़ा हुआ है, इसकी पूजा हो रही है। कि शराब पीता था।' किसी शराबी की आज तक संसार में कहीं भी मान्यता हुई है ? फिर आपका Business इससे कैसे बढ़ सकता है। अगर आपकी इज्जत ही नहीं रहेगी तो आपका Business कैसे? इज़्जत से Business होता है। धोखाधड़ी से नहीं है। जो आदमी एक बार खड़ा हो जाए तो कहते हैं 'एक आदमी खड़ा हुआ है 'ये'।

इस तरह से अपने को आप इन चक्करों में, इन societies में, इसमें इस तरह से क्यों मिलाते चले जाते हैं। आप अपने व्यक्तित्व को सँभालें; इसी के अन्दर परमात्मा का वास है। आजकल के जमाने में ये बातें करना ही बेवकूफ़ी है और कहना ही बेवकूफ़ी है। लेकिन आप नहीं जानते कि आपने अपने को कितना तोड़ डाला है, अपने को कितना गुलाम कर लिया है।

इन सब चीजों में अपने को बहा देने के बाद आपको मैं क्या दे सकती हूँ ? आप ही बताइये। अब कम से कम सबको ये व्रत लेना चाहिए कि हम खुद जो हैं, हमारी इज़्जत है। परमात्मा ने हमको एक amoeba से इन्सान बनाया है। एक amoeba छोटा–सा, उससे इन्सान बनाना कितनी कठिन चीज़ है। हजारों चीजों में से गुज़ार करके, इतनी योनियों में से गुज़ार के, आज आपकी जैसी एक सुन्दर चीज़ परमात्मा ने बनाकर रखी है। फिर आपको उसने freedom दे दी, स्वतन्त्रता दे दी कि तुम चाहो तो अच्छाई को वरण करो और चाहो तो बुराई को। जिस चीज़ को चाहो तुम अपना सकते हो। तुम्हें बुराई को अपनाना है चलो बुराई करो, अच्छाई को अपनाना है अच्छाई करो।

अब, आपको भी सोचना चाहिये कि जिस परमात्मा ने हमें बनाया है, 'इतनी' मेहनत से बनाया है, उसने वो भी इन्तज़ाम हमारे अन्दर ज़रूर कर दिये होंगे जिससे हम उसको जानें और उसको समझें और अपने को जानें और हमारा मतलब क्या है, हम क्यों संसार में आए हैं, हमारा क्या fulfilment है ?मनुष्य ने यह कभी जानने की कोशिश नहीं की कि आखिर हम इस संसार में क्यों आए हैं ? Scientist यह क्यों नहीं सोचते कि हम amoeba से इन्सान क्यों बनाए गए ? हमारी कौन –सी बात है कि जिसके लिए परमात्मा ने इतनी मेहनत की और उसके बाद हमें स्वतन्त्रता दे दी ?

बस इस जगह परमात्मा भी आपके आगे झुक जाते हैं क्योंकि आप स्वतन्त्र हैं। आपकी स्वतन्त्रता परमात्मा नहीं छीन सकते। अगर आपको परमात्मा के साम्राज्य में बिठाना है, आपको अगर राजा बनाना है, तो आपको परतन्त्र करके कैसा बनाया जाए ? आपको क्या hypnosis करके बनाया जाएगा ? आप पूरी तरह से स्वतन्त्र हैं। आप चाहें तो परमात्मा को स्वीकार करें, अपने जीवन में, और चाहें तो शैतान को । दोनों रास्ते आपके लिए पूरी तरह परमात्मा ने खोज रखे हैं।

और सबसे बड़ी मेहनत की है। मैं आपसे बताती हूँ कि गुरुओं ने कितनी आफ़तें उठाई हैं। इतनी ही

मेहनत, आपके पीछे सारे जितने भी अवतार हो गए, उन्होंने, गुरुओं ने, कितनी मेहनत करी है। इनको कितना सताया, हमने उनको कितना छला। उनकी कितनी तकलीफ़, वो सारी बर्दाश्त करके उन्होंने आपको बिठाने की कोशिश की।

लेकिन कलयुग कुछ ऐसा आया, बवण्डर जैसा कि हम सब कुछ भूल गए और हमारी जो भी आत्मिक संवेदना है इसको भूल गए। हम पहचान ही नहीं पाते किसी इन्सान की शक्ल देखकर कि ये असली है कि नक़ली है– आश्चर्य है। शक्ल से ज़ाहिर हो जाता है अगर कोई आदमी वाक़ई परमात्मा का आदमी है। उसकी शक्ल से ज़ाहिर होता है। हम यह पहचानना ही भूल गए कि यह हमारे अन्दर की जो sensitivity है, जो हमारे अन्दर की संवेदनशीलता है वो पूरी तरह से खत्म हो गई। जब श्री रामचन्द्रजी संसार में आये थे सब लोग जानते थे कि ये अवतार हैं। श्रीकृष्ण जी जब आये थे तब सब लोग जानते थे कि ये अवतार हैं। लेकिन आज ये ज़माना आ गया कि कोई किसी को पहचानता नहीं। ईसा मसीह के समय में भी ऐसा ही हुआ। लेकिन उस समय कुछ लोगों ने तो उनको पहचाना। लेकिन आज ये समय आ गया कि सब भूतों और राक्षसों को लोग अवतार मानते हैं।

इस चक्कर से अपने को हटा लेना चाहिये और एक ही चीज़ माँगनी चाहिए कि प्रभू तुम हमारे अन्दर जागो जिससे हम अपने को पहचानें। आत्मा को पहचानें बग़ैर हम परमात्मा को नहीं जान सकते, नहीं जान सकते, नहीं जान सकते। बाक़ी सब बेकार हैं। ये सब circus है। ये सिर्फ़ जिसको कहते हैं बाहरी तमाशे हैं। इस बाहरी तमाशे से अपने को सन्तुष्ट रखने से कोई फ़ायदा नहीं। आप अपने को ही धोखा दे रहे हैं। परमात्मा को कौन धोखा दे सकता है। वो तो आप को खूब अच्छे से जानता है। आप अपना ही नुक़्सान कर रहे हैं। आपको पाना चाहिये, क्योंकि आपकी अपनी शक्ति है, आपकी अपनी सम्पदा है। अन्दर सारा स्रोत है। आपके अन्दर भरा सब कुछ है। इसे आपको लेना चाहिए और फिर इसमें जमना चाहिए।

सहजयोग में जब मैं आती हूँ तो लोग बहुत आते हैं, मैं जानती हूँ। लेकिन यहाँ पर सबका कहना है कि माँ आगे लोग नहीं जाते। अब यहाँ पर हमने ऐसे लोग देखे हैं कि जिनसे हमें कोई उम्मीद नहीं थी, वो कहाँ के कहाँ पहुँच गए। और जो कि बहुत हम सोचते थे, तो वहीं के वहीं जमे बैठे हैं। फिर लेकर आ गए वही सिरदर्द, वही आफतें, वही परेशानिया। वही ये हो रहा है, वही वो हो रहा है, अभी भी उनका उतना ही ऊँचा उठा है।

" सहजयोग में जब तक आप लोगों को देंगे नहीं तब तक आपकी प्रगति नहीं होगी। देना पड़ेगा,जैसे–जैसे आप देते रहेंगे,वैसे–वैसे आप आगे बढ़ेंगे।"

कोई अगर हम लोग बड़ी भारी Boat तैयार करते हैं, Ship तैयार करते हैं, अगर हम उसको पानी में नहीं छोड़ें तो उसका क्या अर्थ निकलता है ? उसी प्रकार है, अगर मनुष्य परमात्मा को पाकर के और घर में बैठ जाए, तो ऐसे दीप से फ़ायदा क्या कि जो जलाकर के आप Table के नीचे रख दीजिये। दीप इसलिए जलाया जाता है कि दूसरों को प्रकाश दे। उससे आप अपने अन्दर अपने को भी

देख सकते हैं और दूसरे को भी देख सकते है। आप अपने भी चक्र देख सकते हैं और दूसरों के भी देख सकते हैं। आप अपने भी आनन्द को देख सकते हैं और दूसरों की व्यथा को भी देख सकते हैं। और आप ये समझते हैं कि दूसरों को किस तरह से देना चाहिये। किस जगह ये चीज़ रोक रही है उसको। किस तरह से इसको हमें बनाना चाहिये।

आज के लिये इतना काफ़ी है। हम लोग अब ज़रा ध्यान करें, देखें कितने लोग पार होते हैं।

"आलस्य सहजयोग का सबसे बड़ा दुश्मन है।"

–श्री माताजी

दिवाली पर आज आप सबसे यह वचन है कि आप जीवन के उच्चतम् एवं श्रेष्ठतम् मार्ग पर पहुँचेंगे। मेरा कहा हुआ एक–एक शब्द यह प्रमाणित करने के लिए सत्य होगा कि जो भी मैं कहती हूँ वह घटित होता है। आपकी जो भी छोटी–छोटी समस्याएं हैं सभी समाप्त हो जाएंगीं। यह परमेश्वरी के सन्देश हैं, आपको तुच्छ चीजों के लिए, धन के लिए, नौकरियों के लिए चिंतित नहीं होना। यह आपका कार्य नहीं है। आपकी नियति इसे कार्यान्वित करेगी। आपको वचन दिया जाता है कि आपकी देखभाल की जाएगी। मुझे आशा है कि आप इस वचन पर विश्वास करेंगे और पूरी तरह से आनन्द मग्न हो जाएंगें।

– परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी
9 नवम्बर, 2003